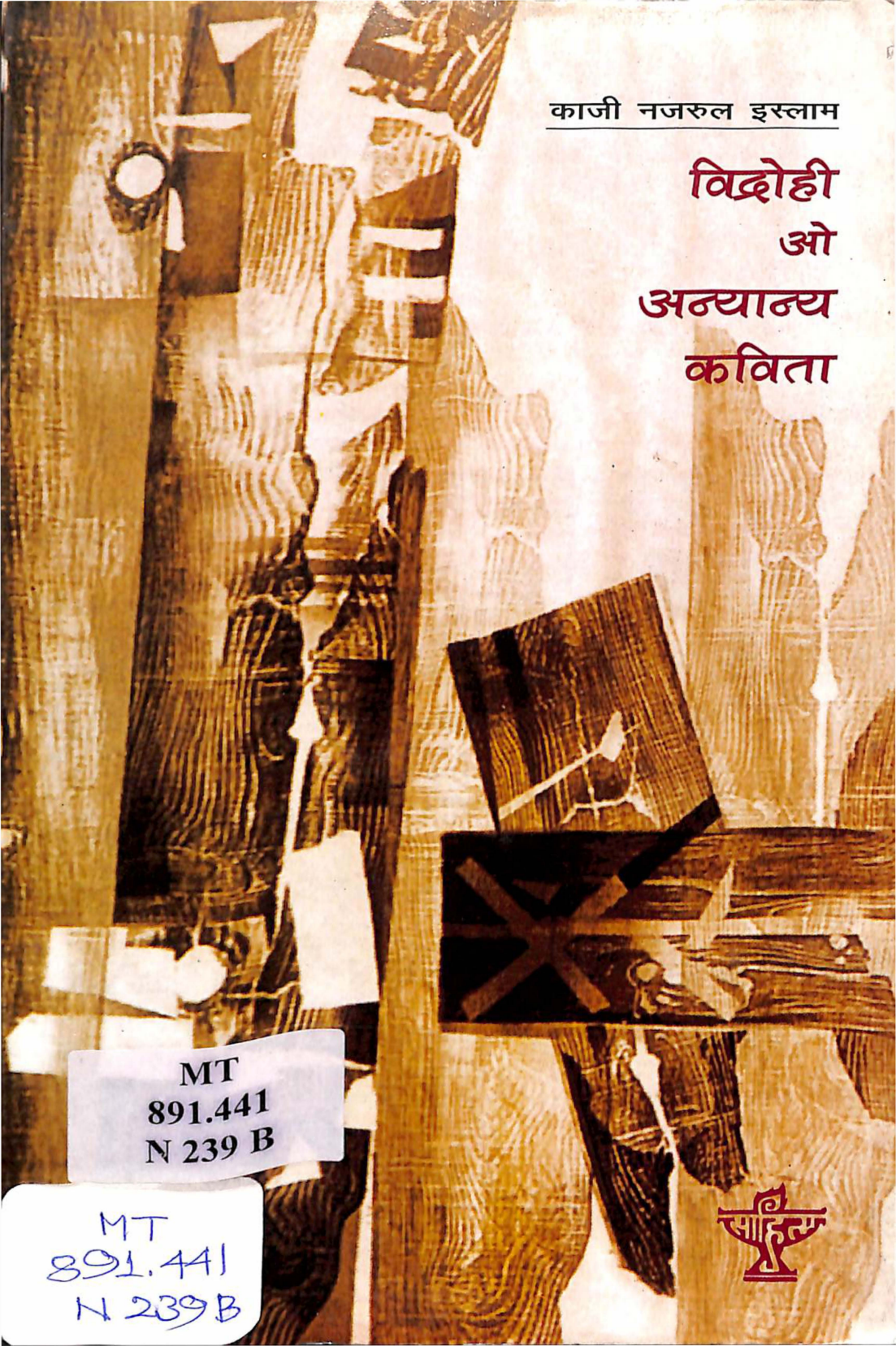

काजी नजरुल इस्लाम

विद्रोही ओ अन्यान्य कविता

MT
891.441
N 239 B

MT
891.441
N 239 B

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

विद्रोही
ओ
अन्यान्य कविता

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदनक राजसभाक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रइल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँ मे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओइ व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कऽ रइल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्र-लिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुन कोण्डा, दोसर शताब्दी इ.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

विद्रोही
ओ
अन्यान्य कविता

काजी नजरुल इस्लाम

मैथिली अनुवाद
उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.441 N 239 B
00117576

Bidrohi O Anyanya Kavita : Maithili translation by Upendranath Jha 'Vyas' of Kazi Nazrul Islam's poems in Bengali, Sahitya Akademi, New Delhi (2003), Rs. 30.00

© साहित्य अकादेमी
संस्करण : 2003 ई.

MT
891.441
N 239 B

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तरामणि, चेन्नई 600 113
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मार्ग, बंगलौर 560 001

ISBN 81-260-1787-2

117576
16/12/04

मूल्य : तीस टाका

शब्दयोजक एवं मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

दू शब्द

महाकवि काजी नजरुल इस्लामक वीस गोट कविताक मैथिलीमे अनुवाद करवाक भार साहित्य अकादेमी द्वारा देल गेल। हम नजरुलक एक छोट कविता-संग्रह जाहिमे क्रान्तिकारी मनोवृत्तिक विशेष पुट रहितो कछु भक्ति परक गीत सेहो छलैक, कतेको वर्ष पहिने पढ़ने छलहुँ।

हम बङ्गालमे-सेहो कलकत्ता मात्रमे छओ-सात दिनसँ वेशी...आठ-दश वेर रहल छी। परन्तु विद्यार्थी जीवनमे वङ्गाली सङ्गी सभसँ सुनैत, बुझैत बङ्गला भाषाक (जे मैथिलीक वहिनि सन छैक) पुस्तक सभ पढ़ए लगलहुँ। शरच्चन्द्रक उपन्यास सभ विशेष आकृष्ट कएलक, हुनक तीन-चारि उपन्यासक मैथिलीमे अनुवादो कएल।

महाकवि नजरुल पूर्व बङ्गाल (आब बाङला देशक, गत शताब्दीक आदि कालहिमे एक क्रान्तिकारी लेखनीसँ-अपन कविता सभसँ-परम प्रसिद्ध भए गेल छलाह।

नजरुल वास्तवमे देशभक्त, साम्यवादी, समस्त मानव समाजकेँ एक रूपेँ देखएवाला, दरिद्र, हीन-दीनक प्रति कारुणिक भावेँ हृदयसँ उद्वेलित क्रान्तिकारी, विद्रोही, आक्रोश व्यक्त करएवाला अद्वितीय कवि छलाह। हिनक विभिन्न भाषा, धर्म-ग्रन्थक अध्ययन-ज्ञान चमत्कृत करैछ।

हम अपन सीमित बङला ज्ञानक आधार पर हुनक एहि बीस गोट कविताक यथा-संभव मूल कविता सभक छन्दमे, कविक समुचित शब्द एवं भावकेँ रखैत मैथिलीमे रूपान्तरित करबाक प्रयास कएल अछि।

वङलामे ह्रस्व, दीर्घ (एक मात्रिक-द्विमात्रिक) अक्षर-शब्द एके रङ बाजल जाइछ, 'तुकवन्दी' सेहो कएल जाइछ कतहु कतहु वेश-पैघ पंक्तिकेँ नमरा कए छोट पंक्ति सङ्ग मिला देल जाइछ।

मैथिली छन्दोबद्ध कवितामे से नहि। परन्तु मैथिलीओमे कतेको अक्षर एक मात्रिक, द्विमात्रिक जेकाँ आ द्विमात्रिक एक मात्रिक जेकाँ बाजलो जाइछ, लिखलो जाइछ। एनए छन्द मिलएबा ले एहेन अक्षर एकमात्रिक अक्षरके द्विमात्रिक रूपेँ उच्चारण करबामे एवं द्विमात्रिक अक्षरकेँ एकमात्रिक रूपेँ पढ़बामे पाठककेँ ध्यान राखब अपेक्षित। सभठाम मनोनुकूल छन्दोबद्ध रूप नहि भए सकल, से हम अपन अक्षता बुझैत छी। 'विच्छन्दाश्च सच्छन्दाः।

एहि अनुवाद कार्यमे कते सफल भेलहुँ, विज्ञ पाठक बुझताह।

उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'

अनुक्रम

1.	भैरवी एकताला	9
2.	किसानक गान	10
3.	जागरण	11-12
4.	प्रलयोल्लास	13-15
5.	सात्-ईल-अरब	16-17
6.	बोधन	18-19
7.	आत्मशक्ति	20-21
8.	बिहाड़ि	22-28
9.	युगान्तरक गान	29-30
10.	विद्रोही वाणी	31-33
11.	विद्रोही	34-38
12.	काण्डारी (कर्णधार) होसियार	39
13.	छात्र दलक गान	40-41
14.	साम्यवादी	42-53
15.	हमर कैफियत	54-56
16.	सव्यसाची	57-58
17.	पथक दिशा	59-60
18.	दारिद्र्य	61-64
19.	ईद मोबारक	65-67
20.	चल चल चल	68-69

भैरवी एकताला

एके डाँटमे फूल दुनू टा हिन्दू छी मुसलमान।
मुसलमान थिक आँखिक पुतरी, हिन्दू जीवन प्राण॥
माँक कोर आकाश एक अछि,
ओहिमे रहि रवि-शशि विभोर अछि,
एक रक्त हृदयक अन्तरमे, नाड़ी एक समान॥

एक देशकेर वायु पिबै छी, एके देशक जल।
एके माएक छाती पर उपजल खाइ फूल आ फल।
एके एहि देशक माटिहिँमे भाइ,
केओ कब्रमे, केओ श्मशान-भस्मक रूपेँ मिलि जाइ।
हम सभ एके भाषा वाजी, एके सूरमे गावी गान॥

चिन्हनहिँ बिना अन्हार रातिमे लड़इत छी अपनामे।
भोर भेलासँ अरे भाइ सभ! चीन्हि जाएब अपनाकेँ।
कानब तखन गराँ मिलि मिलि सभ
क्षमा माङबे अपनेमे सभ!
हँसत ओहि दिन गर्व भरल ई अप्पन हिन्दुस्थान॥

□

किसानक गान

उठ हरवाह देशवासी सभ, हाथ धरै' जो हर।
हम सभ तँ मरिते छी, ऐ वेर नीक जेकाँ मरवा ले' चल॥

हमरा सभहिक रोपल पसरल अन्न भरल हँसइत छल देश।
ई सभ वैश्य देश केर डाकू लूटि लेलक, रखलक नहि शेष॥
अरे भाइ! ओ लाख हाथसँ नोचए लक्ष्मी-माएक केश।
आइ माएक कानबसँ नोनगर भए गेल सातो जलधि विशेष॥

अरे भाइ! हमहूँ सभ छलहुँ सुखी-सम्पन्न देश केर प्राण।
तखन गीत छल कंठ-कंठमे, घरमे भरल वखारी धान॥
आइ कत' ओ गान गेल, आ कत' गृहस्थक मान!
भाइ! हमर शोणितसँ भरइछ आइ ओकर वोतल॥

आइ धनी बनियाँक चारि दिस शोषणकार 'जमात'।
अरे भाइ! ओ जोँक जेकाँ शोणित पीवए
आ' छीनए थारिक भात॥
हमर हृदय लग मरइछ नेन्ना, हमरा नहि किछु हाथ।
आइ सती नारीक वस्त्र खीचए, खेलाए खल हास॥

हम सभ माटिक असली सन्तति, दूर्वादल सन श्याम।
आ' हमरे सन रूप रङक छथि रावण-रिपु श्रीराम॥
एही ठाम हर चललासँ उगली सीता सन नारि ललाम।
आइ हरण करइछ सीताकेँ रावण ओही माटिसँ जात॥

अरे भाइ! हम सभ बलिदानी खेतहिँ दै' छी जान।
आओर ओहि शोणितसँ उपजल हरण करए 'शैतान'॥
हम सभ जाउ कतए जरैछ घर, बाहर उठल 'तुफान'।
आ' सभ दिससँ मारि रहल अछि अमला सभ बैमान॥

आब जाग खेतिहर किसान, कारण किछु नहि छौ डरबाक।
एहि भूखक बलसँ सुधार सङ अछि जग-जय करवाक॥
एहि विश्वजयी दस्युक राजाकेँ न्याय दण्ड देबाक।
एहि बेर देखत सभ्य जगत अछि की किसानमे शक्ति॥

□

जागरण

जागल जे अछि पड़ल सेज पर, तकर द्वारि पर जएबेँ।
अरे अभागल, आ'र कते' दिन बँसुरी अपन बजएबेँ॥
सूतए जे सभ कोमल मखमल गद्दी शय्या पाति।
ओकर भोर पहिने भेलैक, बितलैक ओकर दुख-राति॥
ओकरा ले' आरामक निद्रा, तोरा ले' ई जागक गान।
छूतै नहि रे प्राण ओकर, यद्यपि सुनैत छै' कान॥

झरना केर सुखद तटपर अछि महल बनओने।
ओ सभ सागर पारक लोक न जएतौ डर देखओने॥
भीतरसँ किल्ली लगाए जे कएने बन्द केबाड़,
'खोलू पट अओ' ई कहबे ओकरा, मिथ्या व्यापार॥
विसर आब ओ पथ, ओ पहिलुक बोल।
शान्तिक सूर वजओलासँ के सुनतौ तोहर ढोल॥

दुःखातुर क्रन्दनसँ केवल शान्ति भंग करबेँ रे।
खुआ नाशकारी हफीम छौ तन्द्रारत रखने रे॥
सभ दिन सूतल राखए चाहए, ओहिना पड़ले रह रे।
नव नव रूपेँ बजा अपन तोँ पुनि नबकी वँसुरी रे॥
निसा-कारणे बूझए नहि जे ई सभ कतए खसैए।
ककरो गरदनि छूरी चलबए, छातिहि कतहु चढ़ैए॥

ओकरा सभकेँ मन्त्र दही अपना सभकेँ ओ जानए।
ई सभ अपनहिँ निज कपारकेँ ठोकए सोझ बनाबए॥
जकर गहीँड़ हर चललासँ उस्सर सन भू-भाग
फूल-अन्न-फल डाला भरने आँचर भरल सोहाग॥
हरण करैत'छि के दानव ओ देवताक नैवेद्य?
बुझा दही जोरेसँ कहि कए आब न ओ सभ सह्य॥

वर्वर सभहिक दयाहीन जे हृदय मरुस्थल सजवए।
किट किटाइत ओ रहत एहि वेर अपने घरमे रहि कए॥
वाघ-भालु केर खाल पहिरि कए नगर वसओलक जे केओ।
रसातले चल जाएत ओ सभ मनुज-पशुक भयसँ ओ॥
ओकरे सभसँ ताड़ित, कुंठित, वन्य-जीव अज्ञान।
सभ्य मनुष्यक रूप भेल अछि, सुभग वस्त्र परिधान॥

डाँट-डपट सङ फेर मुखओटा पहिरि आव नख-दन्त।
स्पष्ट देखा आव ओ, पशुकेँ पशुवलिसँ करबे अन्त॥
ओ मानव थिक अत्याचारी जे मनुष्यकेँ मारए।
सभ्य वेशमे वनल दुष्टकेँ मारएमे की अछि भय?
एते' काल धरि वीज हजारो पापक वाग कएल अछि।
आइ ओकर फल काटि भोग करवाक काल पओलक अछि॥

नवका युगक नवल उद्घोषक वजा नवहिँ सुर वंसी।
स्वर्गक रानी होइती' एहि वेर पृथिवी-माटिक दासी॥

□

प्रलयोल्लास

तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
नवका झंडा उड़ि रहलैए वैशाखीक बिहाड़ि भयङ्कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

आबि रहल एहि बेर अनागत प्रलयमत्त नाचैत बताह,
सिन्धुपार केर सिंह द्वारपर देलक धक्का तोड़ल केबाड़।
मृत्यु-गहन सन अन्धकूपमे,
महाकाल केर चण्ड रूपमे,
बज्र शिखाक 'मसाल' जरओने अबइछ रूप भयङ्कर।
अरे ई हँसइछ रुद्र भयङ्कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

कटितट लटकल कच फहराबए, मारि झपट्टा गगन हिलाबए,
सर्वनाशिनी ज्वालामुख केर धूमकेतु ओ चमर डोलाबए।
विश्व पालकक वक्ष कोरमे
ओकर रक्त कृपाण झूलए,
डोलए डोलए।
अट्टहासक घोर रवसँ स्तब्ध दश-दिक् चराचर
अरे ओ स्तब्ध चराचर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

द्वादश रवि वह्निक ज्वाला अछि ओकर कटाक्ष भयङ्कर,
दिगन्तरक क्रन्दन लुण्ठित-अछि पिङ्गल एक जटान्तर।
ओकर नयनक एक विन्दु जल-
सप्त सिन्धुक जल समुच्छल,
ओकर कपोलक तर।

विश्वमायाकेर आसन ओकरे विपुल वाहुपर राजित,
हाँक दैत वाजए ओ 'जयति प्रलयङ्कर'।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

'मा भैः' 'मा भैः' जग समेटने प्रलय अवैत अछि गहन पाशमे,
व्याधिक मारल मृत-प्राय सभ प्राण वचावओ एहि विनाशमे।
एहि वेर महानिशाक शेषमे,
आओत उषा अरुणिमा हँसइत
करुणाक वेशमे
दिगम्वरक शिर जटा खेलाइत शिशु-चन्द्रक मृदुहास,
ओहिसँ एहि वेर होएत सभहिक घरमे आव प्रकाश।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

ई ओ महाकाल सारथी रक्त तडित्-चावुक मारए,
हिनहिनाइत क्रन्दन स्वर वज्रक गान बिहाड़ि सघन आनए।
खुरक टाप ताराकेँ लगइत चिनगारी-अम्वर चमकावए
नभमे नील 'खिलान' रूपमे।
अन्धकारकेर वन्द कूपमे,
देववद्ध छथि यज्ञ-यूपमे,
पाषाण स्तूपमे।
अरे ओकर अएबाक काल अएलै सुन रथ-घर्घर स्वर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

ध्वंस देखि कए भय किएक, प्रलय नवल सर्जनक वेदन,
अब इछ नव जीवन हृत-कुरूपकेँ सुन्दर बनबालए चेतन।
तेँ ओ एहने केश वेशमे
प्रलय रूपमे अबइछ जे,
मधुर हास्यमे।
ई तोड़ए, जानए पुनि बनबए चिर सुन्दर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

ई तोड़ब जोड़ब खेल ओकर, तेँ कथिक डर?
तोँ सभ जय ध्वनि कर,
धूप दीप आरती सजा कए धर।
काल भयङ्कर रूपक अबइछ एहि वेर भए सुन्दर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर।
तोँ सभ जय ध्वनि कर॥

□

सात्-ईल-अरब

सातिल् अरव! सातिल् अरव!! युग युग पवित्र तुअ तीर।
वलिदानी-वीरताक 'खून' लए चलल जतए अरवक प्रवीर!
'जूझल' एतए तुर्क सेनानी,
यूनानी, मिश्री, अरवी, केनानी,
लुटने अछि एहि ठाम मुक्त 'वेदुयन' किसानक शिर
खूजल नाङट शिर॥
हाथमे तरुआरि, आँखिमे नोर वीर नारीकेँ देखल अछि सुधीर।
सातिल् अरव! सातिल् अरव!! युग युग पवित्र तुअ तीर॥

'कुत् आमरा'क खूनसँ भरि कए
'दजला' अनइछ शोणित सरिता
उगिलए खून, तोरा लग नाचए भैरव मस्तानीक
त्रस्ता नीर,
गरजए रक्तधारा 'फोरात' 'दण्ड देलहुँहेँ वदमासीक'
'दजला' 'फोरात' वाहिनी दमन कएलक
युग युग पवित्र जे तोहर तीर॥
तोहर रक्तक वाढ़ि वहा कए
कएल 'इराक आजम'केँ धन भय
वीर-प्रसू ओ देश धन्य ओ रहु वरेण्य
मरण पावि भेल मर्त्य-वीर
ओ मर्त्य-वीर॥

'शहारा'क धुक्कड़मे रहितो पहिरत नहि पद्धति-शृंङ्खल ओ वीर।
'सातिल् अरब', 'सातिल अरब' युग युग पवित्र तुअ तीर॥

दुश्मन शोणित ईर्ष्यालु नील
तोहर तरङ्गो करु झिल मिल।
टेढ़-मेढ़ अवरोध खलक अछि, पीलक नील 'खून' 'पिण्डारीक'।
जे छल वास्तव वीर।

'जुल फिकर' आ 'हायदरी' हाँक एतए आइओ हजरत अलीरक्त।
सातिल् अरब, सातिल् अरब, जीवित रखने अछि तोहर तीर॥

तोहर कपार पर दीपित टीका
'बासरा'-फूलक अग्निहिँ लेखा,
ई जे 'वसोरा'क 'खून-खराबी' रक्त गुलाबक मञ्जरीक खञ्जरीक।
खञ्जरसँ झरइछ खजूरक सन लाखो देश-भक्त केर शिर।
सातिल् अरब सातिल् अरब युग युग पवित्र तुअ तीर॥

ईराक वाहिनी, इ जे कहानी!
के जनैत कहिओ ई वाहिनी
तोरो दुःखमे-'जननी हमर'-कहि कए वहाओत ओ तप्त नीर!
रक्त-क्षीर
पराधीन! एक व्यथा-व्यथित चलल दू ठोप-भक्त वीर।
'शहीदक देश! विदा, विदा, ई अभागल आइ नमित शिर॥

□

बोधन

(1)

अरे भाइ! दुख की हेड़ाएल भारतमे शुभ दिन अछि अवइत,
दलित शुष्क एहि मरुभूमिमे फुलवाड़ी होएत हँसइत।
कानह नहि, नहि दवह, वेदना-दीर्ण प्राणमे आओत शक्ति,
डोलत तोरे ओ शुद्ध शीर्ष भए हरित प्राणकेर अभिव्यक्ति।
जीवन-फाल्गुन-पुष्पोद्यानहिँमे यदि मयूर-आसन राजित
शोभित होएत भाइ! ओहि दिन शिर पर पुष्प मुकुट शोभित॥

(2)

नहि निराश होअह भविष्यकेर अज्ञाने अछि सभ रहस्य,
यवनिकाक उठने प्रहेलिका मधु वीजहिँ सुषुप्त रहु स्वर्ण शस्य।
उत्पीड़न आ अत्याचारेँ हम सभ छी सम्प्रति पर्युदस्त,
वन्धु, करह नहि भय, छन्हि भगवानक मङ्गल विपुल हस्त।
दुःख भाइ की? विगत सुदिन भारतमे आओत पुनि घुरि कए,
दलित शुष्क ई मरुभूमि बनि जाएत पुष्पमय सुरभित भए॥

(3)

दुर्दिनक वाद फिरि जाइछ ग्रह, सभ आशा यदि नहि होअ पूर्ण,
ओ दिन निकट रहल नहि, ई दिन होएत 'जालिम'क दर्प चूर्ण।
पुण्य पियासल जाएत लोक सभ 'मक्का' तीर्थ पवित्र लभ्य,
कण्टकक भयेँ फिरत नहि ओ सभ वरु मार्गहिँ जीवन सुगत्य।
दुःख भाइ की, सुदिन हेड़ाएल भारतमे आओत फिरि कए,
दलित शुष्क ई मरुभूमि पुनि वनत पुष्पवन सुरभित भए॥

(4)

अस्तित्व-भित्ति हमरा सभहिक यदि विनाशकेर ध्वंसपरक,
सत्य हमर नौका-वाहक, परवाहि करी नहि 'तूफान'क।
यद्यपि ई पथ अछि भय-सङ्कुल, लक्ष्य-स्थल सेहो कते दूर,
वल राखह हियमे ध्रुव अलक्ष्य आओत नीचा-लग अभय पूर।

दुःख भाइ की, सुदिन हेड़ाएल भारतमे आओत फिरि कए,
दलित शुष्क ई मरुभूमि पुनि वनत पुष्पवन सुरभित भए॥

(5)

उत्पीड़न अत्याचारेँ हम सभ छी सम्प्रति जे पर्युदस्त,
भय न भाइ, छन्हि भगवानक ओ मङ्गलमय जे विपुल हस्त।
की भय वन्दी, यद्यपि हम सभ छी निःस्व निज अन्हारमे परित्यक्त,
यदि रहत सत्य-साधना अपन होएते जीवन स्वाधीन व्यक्त।
दुःख भाइ की, सुदिन हेड़ाएल, भारतमे आओत फिरि कए,
दलित शुष्क ई मरुभूमि पुनि वनत पुष्पवन सुरभित भए॥

□

आत्म-शक्ति

आबह विद्रोही, मिथ्याघाती, आत्मशक्ति सम्बुद्ध वीर।
सत्यक उन्मुक्त कृपाण, दीप्त विद्युत् असि न्यायक सङ्ग धीर॥
करह तुरीयानन्द आइ,
'हमहूँ छी' वाणी विश्व बीज
ई बुझू भाइ!

पुरुष राज,
सएह स्वराज।
करह जाग्रत नारायण नरकेँ जे निद्रित
छाती पर जकर मृत्यु बैसल।
आत्म भीरु ओहि अचेतनक हियमे जगवह
'हम छी स्वामी' स्तुति कर मङ्गल।

आबह प्रबुद्ध, आबह महान,
ज्योतिष्मान, शिशु भगवान!
आत्म ज्ञान
दीप्त प्राण।
बुझा दहक क्षुद्रो जनमे रवि-तेज रहै छै उग्ररूप,
उदयक तोरणमे उठओ, आत्मचेतन-केतन 'हम आत्मरूप'॥

सुप्त मनमे शक्ति आनह
रुद्ध वेदनकेँ हँसाबह,
हीन रोदन
खिन्न जन
आत्म-सूर्यक तेज देखओ-हृदयमे छै शक्ति पूरे
के ककरो निर्वासन करइछ,
आत्म चेतना स्थिर जँ रहइछ,
ईर्ष्या रण
भीमक सन।

आत्म वलक विश्वास न जकरा, तकरे पाँजर पर पदाघात
ओ महान पातकी जकर अछि सत्य पदानत अरुनत माथ ॥

जगावह स्वाधीनता जे आदि मनुजक प्राण।
आत्म-जगलेसँ विधाताक होएत ध्यान।
के भगवान।
आत्म ज्ञान।

गाबथु उद्गाता-ऋत्विक् सभ ओ अग्नि-मन्त्र जे श्रीक शक्ति।
बिना जगओने प्राणसत्य चेतना, मान्य नहि ककरो आदेश-भक्ति।
आबह विद्रोही तरुण तपस्वी आत्मशक्ति सम्बुद्ध वीर।
बिजुलीक चमक न्यायक असि सङ सत्यक कृपाण आनह सुधीर ॥

□

117576

बिहाड़ि

हम छी विहाड़ि, हम छी विहाड़ि, हम छी विहाड़ि
सन् सन् सन् सन् सन्-सनन् क्वण् क्वण् क्वणत्कारि,
हँ हमर आगमनसँ कानए आकाश वात जंगल सभमे।
अछि-जन्म हमर पश्चिमक अस्तगिरि-शिखर उपर
यात्रा अछि हमर अचम्भित सन
प्राचीक अलक्ष्य पथ-क्रममे,
हम मायावी दैत्यक शिशु छी,
छुटि दौड़ी अनिर्देश अनर्थक सन्धाने।

देखिअ अन्हारमे नहि घेरने अछि नाशक अक्षौहिणी सैन्य
जे कए प्रणाम वाजए 'प्रभु! अहँ तँ छी हमरा सभक दैन्य
दुःख संग युग-युग चिन्हार।
हम सभी छी दास अहँक आज्ञानुसार
आनै छी प्रलय, विहाड़ि, वाढ़ि, दुर्भिक्ष, महामारी
इत्यादिक नाशकार।

आकाशक घण्टा बाजि उठल, वसुधा घहरल,
सूर्यक धुपदानी-मेघवाष्प-धूमाच्छादित कएलक अम्वर।
उलका हाहूह खसए, एवं ग्रह उपग्रहेँ घोषित मङ्गल;
महासिन्धु शङ्खेँ वाजए अभिशाप-आगमन कल कल कल।
हो भयङ्करक जय, जय प्रलयङ्कर भयकर घोषण
वन्दन त्रिकाल कएलक सम्भ्रम।
ध्यान भग्न, रक्ताक्ष रूप आशीष देलन्हि अछि महाकाल,
कुदि उठलहुँ हम आकाशक दिशि 'दुहु उठा वाहु
हम नवल राहु।
देखलहुँ सेवा-रता महीयसी लक्ष्मीकेँ प्रकृतिक स्वरूप
सहसा ओ सेवा विसरि गेली, वश हमर आगमनक डरेँ,
प्रस्तरक शिला सन अचल चूप॥

अनुमानि जेना किछु नाशकार अशुभक भयेँ
जगली अछि शिशुक माथ लग वैसलि ध्यान मग्न, श्वासो न चलए,
मनमे हो ई छथि हेड़ा गेलि मा हमर!
मौन एहि जननीक-शुभ शान्त कोरामे।
प्रह्लाद कुलक हम काल-दैत्य शिशु
'माए हमर!' कहि खसलहुँ हुनि-आँचरमे।

नहि जनैत छी कोन सर्प मनसाक हलाहल लोकेँ
कोन विषक दीपक ज्वाला नील आलोकेँ
अहि-माता कद्रूक गर्भसँ जनमल छी हम
भए सुतीव्र विष नाग
भीषण तक्षक शिशु,
हा कतए होइछ सर्पक नाशक जनमेजयक जाग।
उच्चारण, आकर्षण मन्त्रक के करु मुनि वर,
कए जन्मान्तर पार दौड़ि हम चली मृत्यु-पथ सुनि ओ स्वर।
मन्त्र तेजसँ भस्म भेल उड़ि उपर हमर हिंसा विष क्रोधक कलुष प्राण
ओ तुरीय गति हमर ओह! ओ जे अनादि सम उदित होअ
हिंसा-सर्पान्तक यज्ञक अहँ पुनि करू गान।
दौड़ी अनन्त तक्षक विहाड़ि
सन् सन् सन् सन् सनन् सनन्
सहसा के अइली तोँ मर्त्यक इन्द्राणी माता,
तोहर इएह धूलिक ओछाओन
रखने हमरा ले' जन्मान्तर जातक लगमे;
नुका गेलहुँ आँचर देखैत,
ओ ठाढ़ि भेलि भए कात, हमर मृत्युक पथसँ।
व्यर्थ भेलै' आँचरसँ रोकब,
वहि रहलहुँ-आकर्षणक
मन्त्र-तेजेँ व्याकुल भीषण,
रक्त-रक्तमे वाजि रहल सन् सन् सन्
दूरान्तरसँ माए! हमरा वजा रहल अग्निक हवि ले'
विषहरी सूर।

जननी! हम चललहुँ पथ अनन्त अति चंचल।
तोहर विषसँ मम देह नील, मा वृथा ताप दाहक अंचल।

दौड़ि चली ओहि नाग-यज्ञमे
सुनी रक्तमे मन्त्र आकर्षणी
ममता जननी,
हमर दाहसँ मूर्छित भए ओ खसि पड़ली
हम चली प्रलय-पथ-दिक् विदिक् प्रान्त मरुभूमि रची
विरड़ो, बिहाड़ि, हम छी विहाड़ि, हम छी बिहाड़ि,
सन् सन् सन् सन् सन् क्वण्, क्वण् क्वण्।

कोलाहल कल्लोलक हिलोर 'हिन्दोल'क सन।
दूरस्थक झूला पर चढ़ि दी दोला दी दोल डोल।
उल्लासेँ सोर करैत करी मेघक गर्जन, ताली पीटी,
उन्मद उन्माद भयङ्कर 'तूफानी' वेग-नटी।
छुटि चली ववण्डर, गृहविहीन विनु शासन-वन्धन-गत बिहाड़ि,
इच्छानुसार छन्देँ नाची हाही विरड़ो, हाही-बिहाड़ि।
हमर कण्ठमे लुण्ठित अछि घोर वज्रसन 'गिटकारी',
मेघक वृन्दावन-मुह पर दी विद्युत् ज्वाला केर फिचकारी।
सुखक स्थान उड़ि जाए, खसए छाया-तरु,
हिलए सुदृढ़ भित्ति राज-प्रासादक।
'तूफान' तुरग मम उरगेन्द्रक गति दौड़ि चलए
हम चली जतए अछि जन अशान्त,
हम सोखि प्रशान्त महासागरकेँ ली उसास,
लोक-लोकमे पसरि जाए प्रलय का कनफुसकीक त्रास।

वात्या-विहाड़ि उड़ि चली बवण्डर महावेग गरुड़ासन पर
फड़-फड़ आकाशक खुजल-'शामियाना' करइछ
मम धूलि ध्वजासङ स्पर्द्धा स्वर॥
उन्मत्त सागरक वारि हमर अश्वक वात्या खुर-वेग प्रबल
वश आन्दोलित भए उठए तथा घन-फेन होइछ
झटिका कशाघातेँ अनन्त चञ्चल तरङ्ग रूपेँ उठैछ।
हम मारी मन्त्रक वाण सँपेरा सन उचारि,
बड़ ढेहु उठए जनु मोछ महासागर-मुह पर
जल-नाग-नागिनी छरपि छरपि जनु मरणातुर।
प्रिया हमर अछि चक्रवात 'वेबीलोन'क बाला समान,
आगाँ आगाँ जे चूर्ण करैत चलए झंझासँ चूरक समाधान।

झरना, छोटको धारा प्रवाह सङ नदी-नर्तकिक सुख महान
पुनि शुष्क पर्ण-तृण धूलि, शीत-शीर्ष गत पावि त्राण
फाल्गुनी स्पर्शसँ हमर धमकसँ नमित खसए
वन-गाछ-वृक्ष-शाल्मली तथा पुन्नाग वृहत्
शुचि देवदारु आदिक तरुवर जनु भए पदनत।
चड़-चड़ कए उठए पहाड़क मस्तक ठाढ़ उपर,
दुखसँ कनैत खसि पड़ए वनानी भूतल पर।

प्रिया हमर खूजल केशेँ आगू किछु गीत गवैत चलए,
वतहीक केशमे धूलि भरल, नयनहिँ मायामय मणि झलकए।
घघरी लोचन पथ घुरमाबए, घघरीक घुमाएब चपल ओकर।
घुमइत तरुणी ओ स्मित हास्यक बर्छी चलाए
वाजए 'हा, हा, मन चोर हमर'।
पड़ि रहए त्रस्तसन-ओकर दीर्घ वेणी डोलए
आ छूबए सुकठिन भाल हमर।
बतही भरि भरि मुट्ठी फेकए मारए पीयर सन पथक धूलि
निर्झर कलकल नाद घात करु गात
जनु कमल-दहक फुलाएल फूलक खोँपा खूजि गेल
अछि नुका जाइत आलोक विश्व-शशि, सूर्य तथा तारा त्रासेँ।

ओ दीर्घ राज-पथ अजगर सन जनु भयेँ संकुचित हो प्रतिक्षण
अरु शीर्ण धरणिकेर कूर्म-पृष्ठकेँ करु विदीर्ण मम पद घर्षण।
पाछाँ अवैत अछि मेघक ऐरावत सेनादल
गज-गति दोलासँ झुमैत स्वर्गमे बाजि रहल मेघक गर्जन।
सप्त सिन्धु केर पानि सोँखि ओ सभ सुखसँ सूतै अछि।
निम्नमुखी भए पृथ्वी पर पुनि जलधार नियुत खसबै अछि।
बहि जाए धरा-क्षत रसेँ
सहस्रो पङ्कलिप्त खर स्रोत धार।
अतिचण्ड वृष्टिसँ मुक्त धार,
वर्षाक वक्षपर चमकैत हार।
हम छी बिहाड़ि 'हलजोड़'क सेनापति खेलाइ हम मृत्यु खेल
घूर्णिमा-प्रिया सङ। दुर्योगक 'हूला-हुली' मेल।
दौड़ए पाछाँ पाछाँ हा अश्रान्त हमर;
हमर प्राण रङमे मातल विश्वक शिखि प्राणक प्रेमक स्वर।

श्याम स्वर्ण भय पत्र पुष्प सभ काँपए ओकर वृत कलाप
हमर भयङ्कर झपटहिसँ उठि जाए अग्निज्वाला प्रलाप।
हो भूमिकम्प, जर जर थर थर धरणिक मुखसँ
मन्दार-वासुकी-मन्थन सन भरि जाए सिन्धु फेनिल थूकसँ।
ओहि सिन्धु-मन्थनक हमर व्यथासँ जागि उठए
रवि, शशि, अनन्त वुद-वुद तारागण, उठए पुनः ओ भिन्न होअए,
कते सृष्टि आ कते विश्व, आनन्दक सुगति हमर पावए।
पुनि शिवक सुभग ध्रुव नेत्र
यमक आरक्त घोर प्रज्वाल नयन-अछि प्रदीप्त हमरे रथमे।
जयकार हमर करु स्वर्ग दूत जे 'मिकाइले'क अछि अग्नि-पक्ष,
शत शत वन्धन युत नाग शोभ शिर, शिरस्त्राण-शिखी माथपर
शनिक अशनि ई धूमकेतु केर शिखा भयद
पाछाँ डोलए मम चिर अनन्त कृष्णा रातिक आवरण वसन॥

जटा हमर नीहारिकाक पुञ्ज स्वरूप, धूम-लाल पिङ्गलक रंग,
वहि चलए रक्त-गङ्गा ओहिसँ अखिलक निचोड़ि लोहित निकाश।

हम छी विहाड़ि, हम छी विहाड़ि, विरड़ो विहाड़ि,
कड़ कड़ कड़ कड़॥
धूलि-रक्त मम वाहु विन्ध्यनग सन सूर्यक पथकेँ रोकए
झञ्झना छपट्टा हमर
भीत कूर्म सन
सहसा सृष्टिक खोलहिमे नियति नुकाय।
हम विहाड़ि, जुलुमक जिञ्जीर झनक वाजए भए त्रस्त हमर पएरेँ।
धक्काक धमकसँ हमर, टुटए खन-खन विश्वक जन रुद्ध द्वार।
सागरमे ऊठए वड़वानल, मरकी, अलच्छ जन हमर पएर।
कैलासे उल्लास घोष, डमरू डिम-डिम
द्रिम् द्रिम् द्रिम्।
अम्वर डंकारेँ डमाडोल।
सुजनक छातीमे नोर-वाढ़ि व्यथा कष्टदायक हिरोल।
भाण्डारे सञ्चित दुर्वासा मन हिंसा, क्रोधक तीव्र शाप,
आ भयद उग्रचण्डा फेकए उल्का रूपी-ओ अग्नि-अश्रु
सहि सकए न जग अति तीव्र ताप॥
हम छी विहाड़ि पदतलमे आतङ्क द्विरद

'मा भैः' हाथमे अछि अङ्कुश
हम वलि-दौड़ैत चली-प्रलयक झंडा हाथेँ
हे नव्य पुरुप, हे भव्य पुरुप!
कन्हा पर धए विद्रोहक ध्वजा, कण्टक अशक्त जे भय विहीन
पुरुष सभ-कष्टजयी, दुःख देखि जे दुखी होअ
शत धिक्, शत धिक् ओ कर्महीन।

तोँ करह विश्व-गोलक लए फेका-फेकी खेल।
अछि वीर चढ़ल विप्लवक लाल घोड़ा पर
अछि भीरु पड़एवामे तत्पर॥
हम कही वीर प्राणानन्दे जे करए पान
जीवन रसनासँ प्राण भरए ओ मृत्यु धनक अछि श्रीनिधान।
हम कही-नरक केर 'नार' वेध लेने आवए ज्वालाक कुण्ड,
सूर्यक शुचि चन्दन उठए गगन केर आङनमे।

हम विहाड़ि हम महाशत्रु, श्री, स्वस्ति तथा सुख शाव्दिक छी।
हम कही-श्मशान-सुषुप्ति शान्ति
हम अशान्ति जयकारक छी।
पश्चिमसँ पूवक तक झंझन झाझर
झञ्झा जलझम्पक घोर शव्द वाजी विहाड़ि
झनात्, झनात्, झन्
झमर झमर झन् झमर् झमर् झन्
झन्-झम्-झम्
सहसा कम्पित कण्ठक क्रन्दन हम सुनी ककर
'उठू उठू उठू उठू'।
सजल काजर नेत्र एकसरि के भिजै' अछि सिक्त वसना
के विरहिणी कपोती सन मुक्त श्यामल कच, सुनयना।
नयन गगने ओकर उतरल मेघ भीजल नयन काजर
मलिन कएलक ओकर आँखिक श्याम तारा, मन झमारल।
वायुमे अछि ऊड़ि रहले केतकीकेर पीत परिमल।
ई कोन श्यामला 'परी' पहिरि पूवक परिधान कनैत जाइछ?
उच्छिन्न भेल कोँढ़ी कदम्ब दल यौवन घन अतिव्यथित होइछ।
जगलै बालाक हृदयमे एक कथा आ' कातर मूक व्यथा!

कथा मात्र प्राणे कानए,
आ व्यथा हृदयकेँ छेदैत'छि, मुहपर लक्षित हो आकुलता।
कदम्ब, तमाल 'पियाल'क तर
दूर्वादल श्यामल मखमल पर,
आलता ओकर छै मेटा जाइत,
बान्हए वेणी केओड़ा-वनमे।
आ विदेशिनी आश्रित बैसलि आह्वान शव्द सुनु एक मने।
दादुर सभहिक को-काँ-आतुर कजरी
सुनए आओर आँखि-मेघ काजर धोअए
दुःखक नीर खसए झर झर।
झिम् झिम् झिम् झिम् रिमि रिमि झिम् झिम्
जनु पाएरक नूपुर वाजए
के तोँ पूव दिशक वाला आओर न पावए जोर
चलवा ले', ई व्यथा हृदयमे हमहुँ बुझी।
झिल्लीक झिमिन, झिन झिन स्वर
हो जनु हमरे प्रति रक्त विन्दु झन् झन् वाजए।

हम विहाड़ि, छी विहाड़ि हम, नहि नहि
हम छी मेघ वायु।
नहि बिहाड़ि हे बन्धु;
कतए?
झड़-विहाड़ि अछि कहाँ, कतए?
विप्लवक लाल अश्व हे बजा रहल
हे सुनह, सुनह ओ हिनहिनाइछ
हे, ओकर खुरक चोट मेघो पर छै
नहि, नहि, हम छी जाइत आइ, हम आएव फेर,
हे विद्रोही बन्धु हमर! तोँ जागल रहिह
तोँ रक्षक बनि एहि रक्त अश्व केर
रक्षा करिहह।
हे विद्रोही अन्तर्देव, तोँ सुनह सुनह
मायाविनी करै छह तोरा सोर फेर
पूबक बसातमे
जाय जाय, सभ भसिआएल जाय
पूबक बसातमे सभहि जाय
आ हाय हाय॥

□

युगान्तरक गान

बाज भाइ सभ 'मा भैः, मा भैः'
नव युग ई तँ आबि गेलै'
अएलै अछि रक्त-युगान्तर रे।

वाज अरे ई सत्यक जय जय,
छथि भैरव कर-वराभय,
सुन ई अभयक रथ-घर्घर रे।

अरे वहीर! पाथि सुन कान,
उठै कोन ई महागान
वाजे छे शृङ्गा आ बजबै छे भगवान रे।

जागल सभ संसार,
जागि उठहिँ हो ठाढ़।
तोड़ संरक्षक-माया कारागार रे।

जे किछु छौ ओ जाओ चूल्हिमे
उतरि आबि जो पथक धूरिमे,
उड़लै झंडा झड़-प्रलयंकर रे।

ओहि झड़क झपट्टा लगलासँ
उठलहुँ हमहुँ विशेष वेगसँ,
पाथर सभकेँ तोड़ि बनत ओ प्राणक रक्षक निर्झर रे।

बिसरि गेलहुँ हम अपन आन,
पुनि तोड़ि देलहुँ हम घरक बान्ह,
स्वजन देश भरि अछि स्वदेश अपने घर रे।

पड़ल भाइ जे अन्ध कूपमे,
खाए मारि जीवनक रूपमे,
ओकरा सुनबहिँ प्राण जाग्रतक मन्त्र-स्वर रे॥

× ×

भाइ विहाड़ि केर झटास छोटे
'मा भैः' वाणिक डंका-चोटे
शंका छोड़ि जोरसँ कह प्रलयंकर रे।

तोरा सभहिक चरणक चापेँ
जेना भाइ, मरणक भय काँपए,
मिथ्या पावक कण्ठ पकड़ि कए तोँ धर रे॥

सुना हृदय-भोगल निज गान,
जगा देश-जोड़क शुभ प्राण,
दे वलिदान प्राण आ'र आत्मपर रे॥

हम सभ तँ छी स्पष्टक चारण,
मानी नहि किछु शासन वन्धन;
जीवन मरण हमर सभहिक अछि अनुचर रे।

देखि कए ई भयक फाँसी,
हँसी जोरेँ जयक हँस्सी,
अविनाशी हम नाशक हमरा नहि डर रे॥

गान गवैत जाइ गवैत हम गान,
उड़िआइत ओ ध्वनित होअ' मृत प्राण,
छाउरसँ झाँपल अग्नि भयङ्कर रे॥

कोड़व कब्र, श्मशानो तोड़व,
मृतक हाड़मे प्राण नचाएव
आनव नवल विधान, आव कालक वर रे।

खाली ई राखहिँ भरोस तोँ,
मरहिँ न जे छेँ भटकि गेल तोँ,
ई सुनिले जे भारत-विधिक अपन स्वर रे।

ले पकड़ हाथ, उठ ठाढ़ फेर,
दुर्योगक राति समाप्त भेल,
हे देख माएकेर मूर्ति हसैत मनोहर रे॥

□

विद्रोही वाणी

(1)

अरे दोहाइ तोरा सभकेँ, एहि वेर तँ सत्ये सत्य वाज।
वहुत देखलिऔ तामझाम, सभ झूठ न किछुओ एलौ काज।
एहि वेर सत्य तँ वाज।
भीतरमे किछु आ' मुहमे किछु, ई छौक तोहर ठकपनी बुद्धि।
एहिसँ तँ लोकहँसी भेलौ, जग भरिमे भेलौ कुप्रसिद्धि।
अपनो लगमे तोँ क्षुद्र भेलेँ अफशोच अपन ठकपनी लेल।
वाहरसँ सभटा देखावटी, हे, नहि तरुआरिक डरेँ खेल।
तेँ भेलेँ अन्तमे एहेन आइ,
कापुरुष प्रवञ्चक जग-हँसाइ,
सत्य वात कहने डेराँहि, तोँही सभ करवेँ फेर काज।
फाटल चेफरी पहिरनवालाकेँ कोन लाज?

पहिल वृष्टिमे 'हिलसा' माछक हाँज जेकाँ वुड़िवक दौड़हिँ
किछु- विना जानि।
वूझिअ तोर विचार खूव जे दूधक दूध आ पानिक पानि।
एहि वेर तँ तोँ सभ सत्य बाज।

(2)

हृदयक भीतर चाहिअ वा नहि, मुहसँ वाजहिँ होअओ स्वराज
तोँ स्वराज माने वुझैत छेँ क्रमशः होएत देवक काज।
भारत होएत भारत-वासिक ई कहवामे डर की छैक?
नेता ई वुझवओ वूढ़ लोकनिकेँ, हुनके कहला पर चलक छैक॥
अपन-स्वरूपेँ करए देशकेँ क्लीव, दिनक दिन दीन;
चाहए नहि ई सभ जे होइअ हम स्वाधीना॥
नेता बनक लोभ छै सभकेँ, स्वराज-फ ोाज तेँ ठगक-वाज।
कपटी-प्रेम, फूसि भीतरमे, मुहमे मधुर, हृदय विष-व्याज।
एहि बेर तँ तोँ सत्य बाज।

(3)

बुद्धिमान-नेता सभमे होएतौ' नहि गणना तोहर आइ।
ओ सभ हमरा सभक देवता, करब प्रणाम चरण छुवि भाइ।
बूझै' छैँ तँ वृद्ध वयसमे स्वतः मरणसँ होइछ डर।
झड़-विहाड़िमे हुनका सभसँ नाओ न करतौ कखनहुँ पार।
धरओ युवक अपने पतवार।
एहि विहाड़िमे लगवओ पार।
'अल्ला' बाजि मलाह युवक सभ एहि विहाड़िमे लाख-हजार
प्राण लगओने पएवैँ त्राण।
ओहि दिन एहि नेता सभहिक ध्वंसावशेष पर बना नवल
रहने भय-भीरुता देशकेर प्रेम फड़एवैँ घंटा फल।
एहि वेर तोँ सत्य वाज।

(4)

धर्म पुराणक कथा, प्रेम शृङ्गारक जानिअ दैत'छि हर्ष।
मुदा सापकेर दाँत तोड़ने मन्त्र बलेँ खेलवै' अछि मूर्ख।
'बाघ बाउ, अहँ हिंसा छोड़ू, आउ पढ़ए वेदान्त'।
छागर यदि ई कहए, छड़पि कए वाघ ओकर करतै प्राणान्त।
बाघक अछैत नख-दन्त प्रवल,
ओकरासँ मेल करब निष्फल।
आँखिक नोरेँ डुबलो उत्तर, वाघ करत की वेद-पाठ?
भक्षकसँ नहि हो साँठ-घाँठ।
सुनबथु धर्मक बात धर्मगुरु, पुरुष युवक सभ युद्धहिँ चल।
सेहो नीक जे मरब पीवि कए मृत्यु-दायिनी 'अल्कोहाल'।
एहि वेर तँ तोँ सभ सत्य वाज।

(5)

प्रेम भाव-पूजक जन मन्दिर जाथु करयु आस्थासँ गान।
सभ किछु शिवक, शिवहुँ केशवक, तोहर नहि किछु स्थान॥
मृतक सङ्ग सामिल सम्प्रति ओ हुनकर, पूजा-पाठ जोरसँ होउक।
धर्मगुरुकेर हो समाधि, जे पूजए नित्य जाए बहु लोक॥

तरुण युद्धक क्षेत्र चाहए।
मुक्ति-सेना 'हुकुम' चाहए।

नेता नहि, चाहए 'जेनरल', प्राणपात ले' छुटए हुजूम।
मानव-मेध्यक यज्ञक धूम।
प्राणक अङ्गूरक वनाएल रस ओएह हमर अछि शान्तिक जल।
सोना-माणिक भाइ हमर! आ' जएवेँ के, जल्दीसँ चल।
एहि वेर तँ तोँ सत्य बाज।

(6)

मिथ्या आ' छल-कपट जतए अछि, भाइ! ओतए विद्रोह करब।
आश्रयधारी, वसन-प्रीति, जे मरण भीरु तोँ चुप्प रहह।
हम सभ जानिअ सोझ बात, जे पूर्ण स्वतन्त्रे करव देश।
हे, उठा लेतहुँ झंडा विजयक, मरवा ले' छी, वश मरण शेष।
'नरम'-'गरम' दल खतम भेल, हमरा सभहिक अछि चरम 'दल'।
डुवलहुँ अछि नहि, डुववा ले' छी, ओ स्वर्ग आ कि पातालक तल॥

□

विद्रोही

वाज वीर
वाज उन्नत शिर हम उन्नत शिर।
शिर देखि हमर नतशिर हिमाद्रि सर्वोच्च धीर।
वाज वीर।

बाज-महाविश्वकेर महाभाग आनव उखाड़ि,
चन्द्रमा-सूर्य-ग्रह नक्षत्रोकेँ झाड़ि झाड़ि,
भूलोक, द्विलोक तथा गोलकक भेदन कए
खोदाक (ईशक) आसन-पोषक सत्ताकेँ तोड़ि ताड़ि,
उठलहुँ अछि चिर विस्मय भए हम विधाताक।
अछि ललाटमे रुद्र ज्वलित आ राजतिलक दीपित अछि
शुभ जयश्रीक।

वाज वीर
हम उन्नत शिर, चिर उन्नत शिर।

हम चिर दुर्दम, हम दुर्निवार, हम छी नृशंस,
नटराज महाप्रलयक कारक, हम 'साइक्लोन' छी तथा ध्वंस।
हम महाभयङ्कर छी अभिशापे धरित्रीक।
हम छी दुर्वार
हम तोड़ि करी सभ चूर-चार।
हम नियमहीन, हम उच्छृङ्खल,
हम तोड़ि चली सभ बन्धन, नियम, सकल शृंङ्खल।
हम मानी नहि कानून कोनो,
हम भरल नाओकेँ उनटि डुबाबी, 'टौर्पेडो'
हम भीम महाविस्फोटक-भसिआइत 'माइन'।
फहराइत जटा धूर्जटी-अकालक वैशाखी विरड़ो महान,
हम विद्रोही, हम विद्रोही-सुत विश्व-विधाता केर दान।

वाज वीर,
चिर उन्नत शिर, हम धीर।

हम झंझा, हम विरड़ो विहाड़ि,
पथमे अवरोध पड़ए तकरा हम दै छी तोड़ि ताड़ि।
हम छी उन्मत्तक नृत्य छन्द,
हम अपने तालेँ नाँची, हम जीवनानन्द।
'हम्मीर' राग, 'छायानट' हम 'हिन्दोल' पुनः
हम चल-चंचल, ठमकी-चुभ्मकी,
पथ जाइत जाइत सचकित चमकी,
फिङ् दिआ दिअइ तीन दोल,
हम चपला-चंचल सन हिन्दोल।
हम करी जखन मन जे आबए
शत्रुक सङ्गे गारा-गारी, मृत्युक हाथेँ लड़बी पंजा।
उन्माद प्रबल, हम छी झंझा।
हम धरित्रीक अतिभयद महामारीक रूप
शासन-भंजक, संहार,
हम चिर अधीर

वाज वीर,
हम चिर उन्नत शिर धीर।

हम चिर दुरन्त आ दुर्म्मद
हम दुर्द्दम, मम प्राणकेर पेयपात्र अछि पूर्ण सतत
हम होम-शिखा, हम अग्नि-हस्त जमदग्नि थिकहुँ,
हम यज्ञ-पुरोहित, यज्ञक हमहीँ अग्नि थिकहुँ।
हम सृष्टि, ध्वंस हम, लोकालय पुनि छी श्मशान,
हम छी अवसान-निशावसान।
हम इन्द्राणी-सुत चन्द्र हाथमे तथा भाल पर प्रखर सूर्य,
अछि एक हाथमे बाँसक बँसुरी, अपर हाथमे युद्ध तूर्य।
हम नीलकण्ठ, पिबि मन्थन विषवारिधिक व्यथा
हम व्योमकेश हम धरी मुक्त खसइत मन्दाकिनिधार प्रबल।

बाज वीर
चिर उन्नत शिर हम धीर।

हम संन्यासी छी सुर-सैनिक,
हम छी युवराज तथा परिधान हमर गैरिक।
हम 'वेदुईन', हम छी 'चेङ्गिस्', (चंगेज) खान,
हम अपनाकेँ छोड़ि करी न ककरो 'सलाम'।
हम वज्र महादेवक विषाण ओङ्कार हमहिँ,
हम 'इस्राफिल'क शिँगा-महाहुङ्कार हमहिँ।
हम छी पिनाकपाणिक हाथक डमरू त्रिसूल,
हम धर्मराजकेर प्रवल दण्ड।
हम चक्र, शङ्ख-ओ पाञ्चजन्य, हम प्रणव मन्त्र नादो प्रचण्ड॥

हम क्रोधी दुर्वासा, विश्वामित्र-शिष्य,
हम दावानलक प्रवाह कए देब दहन हम सकल विश्व।
हम हृदय खोलि कए हँसी मुक्त उल्लास-हास
हम सृष्टिक वैरी महात्रास,
हम महाप्रलयकेर द्वादश-सूर्यक राहु-ग्रास।
हम क्षण प्रशान्त, कखनो अशान्त हम छी दारुण स्वेच्छाचारी।
हम उज्ज्वल, हम प्रोज्ज्वल, दर्प-प्रहार करी।
हम उच्छल जल छल-छल चलोर्मि हिन्दोल दोल॥

हम बन्धन हीन कुमारिक वेणी, तन्वी नयनक वह्नि।
हम षोड़शीक हृदयक सरसिज प्रेमोद्दाम तथा धन्वि।
हम उदासीनकेर उन्मन मन, हम छी उदास,
विधवाक हृदय-क्रन्दन-श्वास, हम हुताशनक छी हा हुताश।
हम वञ्चित व्यथा पथक-वासिक, चिर गृहविहीन हम छी पथिकक,
हम अपमानितक अन्तरक दुःख, विष ज्वाला प्रिय लाञ्छित हृदयक।
हम अभिमानी चिर क्षुब्ध हृदयकेर कातरता अति निविड़ व्यथा।
चितचोरक चुम्बन कम्पन हम, तन थर थर प्रथम-स्पर्श-नवल कनिआक कथा॥
हम गुप्त प्रियाकेर चकित दृष्टि, छलसँ देखबा ले' रहु अनुखन।
हम चञ्चल युवतिक प्रेम, ओकर हाथक कँगना चूड़ी खन-खन।
हम छी चिर शिशु, पुनि चिर किशोर।
हम यौवनसँ डरइत ग्राम्या-बालाक वक्ष झँपइत निचोल॥

हम उत्तर वायु, अनिल मलयज, हम उदासीन पुरिबा बसात।
हम पथिक-कविक गंभीर रागिणी वेणु-वीण पर गीत नाद॥

हम तीव्र निदाघक तृषा तथा हम रौद्र चण्ड मार्त्तण्ड थिकहुँ।
हम मरु भूमिक विरड़ो विहाड़ि, हम श्यामल छाया रूप थिकहुँ।
हम चली तुरीयानन्द मग्न ई की उन्माद उन्मादे हम!
सहसा हम अपनाकेँ चिन्हलहुँ सभटा खूजल मम बन्धन क्रम।
हम छी उत्थान, पतन हमहीँ, हम अचेतनक चितमे चेतन।
हम विश्व-तोरणक ऊपरमे फहराइत मानवक जय-केतन॥

दौड़ी विहाड़ि सन हाथेँ हम ताली पिटैत।
स्वर्ग मर्त्य मम करतलमे,
'ताजी बोरबाक' आ उच्चैःश्रवा हमर वाहन
जे हिम्मतिसँ हिनहिनाइत चलए।
वसुधाक वक्ष पर ज्वालामुख, हम बड़वानल, हम कालानल,
हम पातालक विक्षिप्त अग्नि, पघिलल पाथर, कल्लोल लोल करु कोलाहल॥
हम विद्युत् पर चढ़ि उड़ी-तीव्र कूदी फानी
हम त्रासक सञ्चारी, पृथिवीपर सहसा भूकम्पो आनी।
हम झपटि वासुकिक फणा धरी,
स्वर्गीय दूत हम 'जिब्राइल' केर अग्नि पाँखिकेँ से झपटी॥

हम देवताक शिशु, हम चंचल।
हम धृष्ट, हमहिँ दाँतेँ चीरी विश्वमाएक रक्षक अंचल।
हम 'अर्फियास'केर बाँसुरी
जे महासिन्धु उद्वेलित घुन् धुम्
धूम-चुम्बनसँ निखिल विश्वकेँ करी शान्त।
मम बाँसुरीक मृदु तान पसारी।
हम श्यामक हाथक बाँसुरी।
खिसिआए उड़ै छी जखन दौड़ि हम महाकाशकेँ झाँपिय।
डरसँ सातो नरक तथा 'दोजख'क अग्नि ज्वाला काँपए।
हम विद्रोहक वाहक छी, अखिल विश्वमे व्यापित भए।
हम श्रावण प्लावन वन्या
कतहु धरणि वरणीया बनबी, कतहु ध्वंस भय धन्या।
हम छीनि लाएब विष्णुक वक्षस्थल सुखक युगल कन्या॥
हम छी अन्याय, गगन उल्का, हम बज्रपात।
हम धूमकेतु ज्वाला विषधर हम कालनाग।

हम च्छिन्नमस्तिका छी चण्डी, रणदायिनि सर्वविनाशिनि हम।
हम 'जहन्नुम'क आगिक विच वैसल फूलक हँसी हँसै छी हम॥

हम मृण्मय, हम चिन्मय,
हम अजर, अमर, अक्षर अव्यय।
हम मानव, दानव, देवताक भय
विश्वक हम छी चिर दुर्जय।
जगदीश्वर ईश्वर हम पुरुषोत्तम सत्य।
हम ताकि ताकि घूमैत फिरी, स्वर्ग तथा पाताल मर्त्य।
हम उन्माद हम उन्माद!!
हारि कए 'दोजख' सातो नरक एहि नरकहि सन भीषणतम।

हम चिन्हलहुँ अछि अपनाकेँ आइ हमर सभ वन्धन अछि खुजि गेल।
हम क्रूर परशुरामक कुठार,
निःक्षत्रिय करवे विश्व, लाएव शान्तिक शासन उदार।
हम हल वलरामक स्कन्ध उपर
फेकव उखाड़ि परतन्त्र विश्व, सिरजव नूतन सभहिक सुखकर॥
हम अति विद्रोही रणक्लान्त,
हम भए जाएव ओहि काल शान्त
उत्पीड़ित सभहिक क्रन्दन-ध्वनि नहि भरत जखन आकाश
आ' अत्याचारिक अस्त्र-शस्त्र नहि रणक हेतु करते झन्-झन्।
विद्रोही छी रणक्लान्त,
हम ओही दिन भए जाएव शान्त॥

हम विद्रोही भृगु भगवानक वक्षस्थल पर रखलहुँ चरण चिह्न।
हम स्रष्टा-सूदन शोक-ताप-दायक स्वैच्छिक विधि-वक्षस्थलकेँ करव भिन्न॥
हम विद्रोही भृगु भगवानक वक्षस्थल पर रखलहुँ चरण चिह्न।
हम स्वेच्छाचारी विधिक वक्षकेँ करव भिन्न।
हमर चिर विद्रोही वीर
सकल विश्वमे उठलहुँ अछि एकसर
हम चिर उन्नत शिरःधीर॥

□

काण्डारी (कर्णधार) होसियार!

कोरस (समवेत गान)
दुर्गम पर्वत कान्तार मरुस्थल दुस्तर पारावार,
नाँघए पड़ते मध्य रातिमे, यात्रीगण होसियार।

डोलि रहल अछि नाओ, वढ़ै' अछि पानि, ताहि पर नाविक पथ बिसरैए।
फाटि गेल अछि पाल, धरत के 'हाल' एहेन कालमे 'हिम्मति' के देखबैए?
के छह वीर जवान, आगु आवह, भविष्य वजवै' छह।
एहि विहाड़ि आ' विकट समयमे, नाओकेँ पार लगावह॥

राति अन्हार, मातृ-मन्त्री रक्षक जागल रह सावधान।
युगयुगान्त सञ्चित वाधा घोषित भेल'छि अभियान॥
चिरवंचित उरमे उफनाएल अछि पुञ्जिते अभिमान।
एकरा सभकेँ पथ देखाए, देवए पड़ते अधिकार॥

निस्सहाय ई जाति न जानए, हेलए-ओ अछि डूवि रहल।
कर्णधार हम आइ देखवह मातृ-भूमि प्रति प्रेम प्रवल॥
'हिन्दू आ' की ओ मुसलमान-ई के पूछैए क्षुद्र प्राण?
'काण्डारी' वाजह मनुष्य डूवैत'छि सभ माइक सन्तान॥

पर्वत-सङ्कट यात्री सभ भयभीत गुरु गम्भीर 'आवाज'।
पथ वीहड़ यात्री सभकेँ सन्देह होइत छै' आज॥
'काण्डारी'! की मार्ग विसरवह छोड़ि देवह पथ-माझ?
झगड़ा-दन्न करैत चलह-तोँ छिनइत भार महान॥
कर्णधार! तोहर सम्मुख छह पलासीक ई 'प्रान्तर'।
बङ्गालीक रक्तसँ 'क्लाइब'क लाल भेल छल 'खंजर'।
ई 'गद्दार' डुबा देलक हा भारत-देश-दिवाकर।
हमारा सभक रक्तसँ रञ्जित उगता पुनः प्रभाकर॥
फाँसिक मंचहिँ चढ़लक जे सभ जीवनक जयगान
अछि गबैत, ओ सभ अलक्ष्यमे ठाढ़ की देत पुनः बलिदान।
आइ परीक्षा अछि जातिक जातिक करएबह त्राण।
डगमगाइत अछि नाओ, बढ़ै' अछि पानि, कर्णधार होसियार॥

□

छात्र दलक गान

हम सभ शक्ति, हमहिँ सभ वल
हम सभ छात्रक दल।
हमरा सभहिक पाएरक तरमे मूर्छित होइछ विहाड़ि
ऊर्ध्व विमान वारिधर झड़।
हम सभ छात्रक दल॥

हमरा सभक अन्हार रातिमे वाधा-पथमे
यात्रा खूजल पाएर,
हम सभ सक्कत माटि रक्तसँ रङि कए
चली विपम पथ दौड़ि
एहिना-युग युगसँ हमरे शोणितसँ
अछि सिक्त भेल भू-तल।
हम सभ छात्रक दल॥

हमरा सभहिक कक्षच्युत प्रायः ओ अछि धूमकेतु
लक्ष्य-हीन सभ प्राण।
भाग्यदेवकेर बलि-वेदीपर
हम सभ दी वलिदान॥

जखन जाथि स्वर्गक दिशि लक्ष्मी,
हम सभ नील पाताल,
हम सभ छात्रक दल॥

हम सभ धरी मृत्यु राजाकेर
यज्ञक अश्वक रासि,
हमरा सभहिक मृत्यु लिखए
हमरे सभहिक इतिहास।
हँसिक देशमे हमसभ आनिअ
नाशक आँखिक जल
हम सभ छात्रक दल॥

सभ केओ जखन वुद्धि वढ़वए
गलती हम सभ कएलहुँ।
सावधान जे छल धुर वन्हलक
हम कछेर तोड़ि देलहुँ।
भयद रातिमे हम सभ तरुण
करी रक्तसँ पथ पिच्छल!
हम सभ छात्रक दल॥

हमरा सभहिक आँखिमे जरइछ ज्ञानक तेज 'मसाल'।
हृदय भरल आक्रोश,
कण्ठ हमर कुण्ठा विहीन
सुनि नित्य कालक आह्वान।
हम सभ टटका रक्तसँ कएलहुँ लाल
सरस्वतीकेर श्वेत कमल।
हम सभ छात्रक दल॥

एहि भयंकर उपप्लवक दिन
हम सभ दी निज माथ।
हमरा सभसँ मुक्ति कनैत'छि
विशम शताव्दिक आश।
हम सभ गौरव क्रन्दन दए कए
भरलहुँ माएक श्याम अञ्चल।
हम सभ छात्रक दल॥

हम सभ रचिअ प्रेम वन्धन
आशाक सूत्र भविष्यक सुस्वागत
स्वर्गीय पथक आभास देखावए
आकाशक ओ छायापथ।
हमरा सभहिक दृष्टि विश्ववासीक
स्वप्न देखव अछि लोक संकल
हम छात्रक दल-हम छात्रक दल॥

□

साम्यवादी

गवै छी साम्यवादी गान।
जतए आवि एक भए गेल'छि वाधा ओ व्यवधान।
जतए मिलल अछि हिन्दू, वौद्ध मुसलमान, कृस्तान॥
गावी साभ्यवादकेर गान।
के तोँ पारसी, यहूदी जैन, सन्थाल, भील आ गारो,
'कनफूसियस्' चार्वाकक चेला, कहै जाह किछु आओरो।
भाइ, जे खुशी से होअह,
पेट, पीठमे कान्ह, माथमे जे खुशी से ग्रन्थ पढ़ह
कोरान, पुराण, वेद-वेदाङ्ग, वाइविल, त्रिपिटक
जेन्दावस्ता, गुरुग्रन्थ साहेव सभ पढ़ह जते तोँ पढ़ि सकह
किन्तु किए ई पशु सन श्रम-मनमे भोँकए शूल?
किअ' दोकानमे दर लें झंझटि? पथहिँ प्रस्फुटित फूल॥
तोहर रहै छह सकल ग्रन्थ आ सभ कालक जे ज्ञान।
सकल शास्त्र तकलासँ पएवह, मित्र! देखवह निज प्राण॥
तोरेमे सभ धर्म रहै छह, सकल युगक अवतार,
तोहर हृदय विश्व-देवक छह सभ देवक आधार।
किअ' तकैत छह पूज्यदेवकेँ मृत-मूर्तिक कङ्कालमे।
छथि हँसैत ओ जखन अमृत-हृदय गत निभृत अन्तरालमे॥

वन्धु कहिअ नहि झूठ,
एतए आबि लुटवए पड़ैछ सभकेँ निज राजमुकुट॥
इएह हृदय ओ नीलाचल, काशी, मथुरा आ वृन्दावन,
बुद्धगया आ 'जेरुजलम' ओ 'मदीना'क 'कावा'क भवन॥
मस्जिद इएह तथा मन्दिर, गिर्जा इएह जतए सुहृदय,
पाओल बैसि ध्यानमे ईशा, मूशा, 'सत्य'क परिचय।
इएह रणभूमि-युवक वंशीधर गाओल अद्भुत गीता।
एही बाधमे भेँड़ी चरवाहा भेलाह अछि 'नवी' 'खोदा'केर मीता॥
एतहि हृदयकेर ज्ञान-गुहामे वैसि शाक्य-युव शुद्ध-
राज्य त्यागि मानवक वेदना देखि-भेल छथि वुद्ध।

एहि कन्दर'मे अरव-दुलाल सुनैत छला' आह्वान।
एही ठाम वैसल ओ गओलन्हि 'कोरान'क शुभ गान॥
नहि मिथ्या किछु भाइ;
एहि हृदयसँ वढ़ि कए मन्दिर कावा किछु, अछि नाहिँ॥
के तकैत छह जगदीश्वरकेँ तोँ आकाश पताल।
के तोँ घूमह वन जङ्गलमे के अति ऊँच पहाड़?

हा फिरैत 'दरवेश'!
हृदयक मणिकेँ हृदय राखि तोँ ताकह देश विदेश।
सृष्टि रहैछ तोरा दिशि तकइत तोँ मुनने छह आँखि।
स्रष्टाकेँ ताकह अपनामे, पएबह अपनहिमे राखि॥
इच्छा अन्ध-आँखि खोलि देखह दर्पणमे निज काया।
देखबह, तोरे सभ अवयवमे पड़इत ओकर छाया॥
सिहरि उठिअ नहि शास्त्रविज्ञजन, डर नहि किछु करबाक
ओ सभ 'खोदा'क निज 'प्राइभेट' सेक्रेटरी' नहि बुझवाक।
सभक वीच हुनकर प्रकाश आ' प्रकाशमे ओ छथि'
अपनाकेँ देखैत बुझथि बुधजन जन्मदाता के छथि।
लए कए रत्न किनए-बेचए ओ वणिक समुद्रक तटमे।
रत्नाकरक विषय नहि बूझए ओ वनिजा अपनामे॥
ई सभ रत्ने टा वनवए
रत्न चीन्हि सोचए मनमे ओ सभ जे रत्नाकरकेँ चीन्हए।
डूबए नहि ओ अतल गँभीरहिँ रत्नक सिन्धुक तरमे,
शास्त्र घोँटह नहि, डूव दएह तोँ सत्य-सिन्धुकेर जलमे॥

मनुष्य

गावी साम्यक गान!
नहि मनुष्य सन पैघ केओ, आ नहि किछु वुझिअ महान।
देशकाल पात्रो नहि भेद अभेद धर्म ओ ज्ञाति।
सकल देश ओ सभ कालहुँमे घर घरमे मानव जाति।

'खोल, पुजेगरी द्वार
क्षुधित देवता ठाढ़ द्वारि पर, शीघ्रे होउ बहार।'
स्वप्न देखि आकुल पूजक खोलल तुरन्त भजनालय।
देवताक आजुक वरसँ होएब राजा हम निश्चय॥

जीर्ण वस्त्र अरु शीर्ण गात्र पुनि कण्ठ क्षुधासँ क्षीण,
वाजल पथिक-'द्वारि खोलु वावा, भूखल हम सात दिवससँ दीन।
सहसा मन्दिर भए गेल वन्द, भूखलजन घुरि कए चलल फेर।
छल राति अन्हार पथहिँ बढ़इत, भूखेँ जरइत छल पेट ओकर।

भूखल ओ दुःखेँ बाजि उठल
'ई मन्दिर छैक पुजेगरीक हे देव! अहँक नहि स्थान रहल'॥
मसूजिदमे आएल छै 'सिरनी', आइ 'गोश्त' आ रोटी,
वाँटि लेलक 'मुल्ला' साहेब खाइछ हँसइत कुटि-कूटी।
एहेन समय ओ गेल मोसाफिर देह विचित्र सन दीन।
वाजल-वावा हम छी भूखल-भेल इ सातम दिन।
ख़िसिआएल सन बाजल मुल्ला- भला होअ-देखै छी
भूखल छैँ, मर, जो मरघटमे तोँ 'नेवाज' पढ़लेहँ की?
भुक्खड़ कहलक 'नहि वावा' मौला वाजल-'हट सार'।
'रस्ता देख' गोश्त रोटी लए कएलक वन्द केवाड़।

भुखल वेचारा फीरि चलल,
चलिते चलिते ओ ई वाजल
अस्सी वर्ष कटल, हम कहिओ अहाँसँ नहि किछु मङलहुँ।
हमर क्षुधाक अन्न तै सँ प्रभु, बन्द अहाँ नहि कएलहुँ।
मसूजिद् मन्दिरमे अहाँक प्रभु! नहि मनुष्यकेर दावी।
मौला, पूजक लगा देने अछि सभ दिशि ताला चाभी॥
कतए गेल 'चेङ्गीज' अजनवी, ओ 'महमुद' 'काला पहाड़',
तोड़ि देअओ ई भजनालय सभ ताला लागल फाटक द्वार।
के खोदाक घरमे केबाड़ लगवए आ के ताला लगवए,
द्वार हुनक खूजल रहतै ले, चला हथौड़ी, खन्ती लए॥

हाय रे भजनालय! हे भगवान!
तोहर मिनार पर बैसल 'भक्त' गवैए स्वार्थक गान।

मनुष्यक प्रति घृणा करए
ॐकार, कोरान, वेद, बाइविलकेँ सादर चूमए, की बूझए?
ओ मुहसँ धर्मक पुस्तककेँ उच्चस्वरसँ खूव पढ़ए।
जे अनलक अछि धर्म ग्रन्थ, ओही मनुष्यकेँ ओ मारए।
पूजैछ ग्रन्थकेँ वञ्चकदल अरे मूर्ख ई बात सुनह।
अनलक अछि ग्रन्थ मनुष्य-ग्रन्थ नहि मनुष्यकेँ वात बुझह॥
आदम, दाउद, ईशा, मूसा, इब्राइम एवं मोहम्मद,
श्रीकृष्ण, वुद्ध, नानक, कबीर-ई सभ जे विश्वक सम्पद॥

हिनके सभहिक पिता-पितामह ओ हमरो छथि आप्त।
हुनके सभक रक्त कम-वेशी अछि धमनी-गत व्याप्त॥
हम सभ हुनके सन्तति सभहिकेँ हुनके सभ सन देह।
के जानए कखनो केओ होएत अति महान एहि गेह॥
हँसह वन्धु नहि, अपनाकेँ हम कत अनन्त तल कत असीम
तक जा कए अपनहिँ जाँचिअ के अछि ओ
जे हमरा ले' हो महामहिम?
भए सकैछ हमरा सभमे अबइत अछि कल्कि-
आ' तोहर सभक 'मेहदी ईशा'।
के जानए ककर अन्त ओ आदि, के पाबि सकै अछि ओकर दिशा।
ककरा करैत छह घृणा भाइ! तोँ ककरा मारह लाठी?
भए सकैछ एकरे हियमे भगवान बसथि दिन राति।
अथवा ओ किछु नहि अछि उच्चस्थल पर लोक महान
अछि; क्षत-विक्षत गात्र क्लेदसँ लिप्त पड़ल म्रियमाण॥
तैओ जगतक जत पवित्र ग्रन्थक ओ भजनालय
एहि एक क्षुद्र देह सन नहि अछि पूत मनुज ई मानए॥
एहनो भए सकइछ एकरे तनसँ होएत तृणघर वासे
जन्म लेत केओ एहेन तकर जोड़ा न विश्व-इतिहासे॥
वाणी जे सुनलक न आइ धरि, महाशक्ति जे जग धएने।
विश्व आइ धरि देखल नहि जे ओ आबए एहि तृणक घरमे॥
ओ के? चाण्डाल? चमकलहुँ किए, घृणित न अछि ओ व्यक्ति।
जनु-एहि पापेँ हरिश्चन्द्रकेँ भेल श्मशान-नियुक्ति॥
आइ जे अछि चाण्डाल काल्हि भए सकए महायोगी सम्राट।
अहाँ काल्हि जा अर्घ्य देवन्हि-आ करबन्हि नन्दीपाठ॥
चरबाह सभहिँकेँ छोट बुझह, ओ अवहेला हा ककर होअए?
प्रायः सुगुप्त-ब्रजमे 'गोपाल' रहला चरवाहा-रूपो भए।
खेतिहरकेँ तोँ सभ छोट बुझह?
देखह खेतिहर-प्रिय नृपति जनक, बलरामक कान्हहिँ अस्त्र देखह,
जते 'नवी' सभ मेषक पालक सभ जोतल हर-फार।
ओ सभ अनलन्हि अमृत वचन जे अछि, रहते सभ काल॥
द्वारि द्वारि पर गारि सुनैत फिरैछ भिखारि आ' भिखरिनी।
ओकरा सभ सङ्ग अएला कखनहुँ भोलानाथ-गिरिजाक संग
हम हुनका सभकेँ चिन्ही।
तोहर भोगक कम भए सकतह एक मुठी भिक्षा देबह।

द्वारि द्वारि पर मारि खाइत तोँ देवताक पाछाँ दौड़ह।
ई मारि तोहर रहतह जमा
के जानए लाञ्छित देवता कहुना तोरा करत क्षमा।
वन्धु तोंहर हिय-भरल-लोभ, दुहु आँखिक जनु स्वाथर्क पपनी।
नहि तँ देखितह तोरे सेवैत देवता भए गेला कुली सन की?
जे किछु देव मनुष्यक हियमे वेदना मथित अछि ओएह सुधा।
ओकरा लूटि खएवेँ रे पशु! ताहिसँ मेटएवेँ अपन क्षुधा?
तोहर क्षुधाक आहार तोहर मन्दोदरीएकेँ अछि वूझल।
तोहर मृत्युक वाण-तोहर प्रासादक कोनहिमे राखल॥
तोरे कामना घृणा भरल
युग युगमे पशुकेँ फेकल अछि घिसिया कए तोरा मृत्यु-विवर॥

पाप

करु समताकरे गान भाइ!
सभ पापी तापी हमर वहिन सभ हमर भाइ।
एहि पापदेशमे पाप करए के नहि अछि पुरुष कि नारि।
हमरा समकेँ छोड़ु पापहि पङ्कगत पापी सभहिक धएने करुआरि॥
तैँतिस कोटि अमर दल पापेँ स्वर्ग करैत'छि टलमल।
देवताक पापक पथ धएने स्वर्गहि पैसल असुरक दल॥
'आदम' तोँ सुरू करह एहि 'नजरुल हक्' धरि सभ केओ।
कमोवेश कए पापक छूरीसँ पुण्यक 'जवह' कएलहुँ।
ई विश्व पापक स्थान
आधामे भगवान तथा आधामे शैतान।
हे धर्मान्ध व्यक्ति, अहँ सूनू।
अनकर पाप गनक पहिने अहँ अपन-पापकेँ गूनू॥
पाप-पङ्कमे पद्म पुष्प, आ' पुष्प पुष्पमे पाप।
सुन्दर एहि भरल धरणी पर वञ्चनाक अभिशाप॥
एकर सभक प्रतिकार न कए सकल केओ जे अवतार लेल।
आस्था, प्राण पुण्यकेँ देलन्हि-पापकेँ देह अलेल॥
वन्धु! कहिअ नहि मिथ्या हम।
ब्रह्मा, विष्णु, महेशसँ लए देखह सभकेँ जे निम्नो छथि।
छोड़त मनुष्यकेर वात एखन, जत ध्यानी, मुनि आ' योगी
आत्मा हुनकर तयाग तपस्वी देह हुनक छल भोगी॥
ई दुनिया अछि पापशाला।
धर्म गदहाक पीठपर, अछि शून्य पुण्यकेर छाया।

भाइ, एतए सभकेँ तोँ बूझह पापी।
अपन पापक वटखारासँ आनक पापकेँ नापी।
किअए जवावदेही एतेक यदि देवते अहाँ होइ!
शिखा राखि, टोपी पहीरि, सत्ये कहु की अहँ पापी नहि?
पापी नहि यदि किए बाह्य आडम्वर 'भक्त'क धूम?
नदी कात अति सूक्ष्म बसन तन छह पापक आसामी गूम!
वन्धु! एकटा हँसी मजाकक बात सुनह
एक बेर निष्पाप 'फरिस्ता' स्वर्ग-सभा गेल, बात बुझह।
ई आलोचना कएल केओ जे विधिक नियम जनु दूषित अछि,
दिन राति एते जे पूजा करइछ ओकरा देखिअ जे दुःखित अछि॥
तै ओ ओ सभ खुशी न ओकरा जते स्नेह दया होअए
पापानुरक्त माटिक मनुष्य जातिहि ले' की एना होअए!
सुनलन्हि सभ किछु अन्तर्यामी, हँसइत वजला करुण वचन
'मलिन धूलि-सन्तान'छि ओ सभ निश्चय अछि ओ, दुर्वल मन॥
फूल फूलमे विस्मृति दुख आ नयन अधर अभिशाप।
कामनाक ज्वाला चन्दनमे, चन्द्रहि चुम्बन ताप॥
ओतए कामिनिक नयनहि काजर, श्रोणीमे चन्द्रहार।
लाक्षा रंजित चरण, अधर ताम्बूल देखि हत मार॥
प्रहरी ओतए आँखिमे आँखि मिला हँसइत बदमास।
हृदय हृदयमे वक्र पुष्पधनु पुलकित तनु मृदु हास॥
देवदूत सभ कहलन्हि 'हे प्रभु! हम सभ देखितहुँ केहेन 'धरा'।
कोना ओतए प्रस्फुटित पुष्प हो जकर शिरहिँ अछि मृत्यु-जरा॥
कहलन्हि विभु- 'तोरा सभमे जे श्रेष्ठ छथुन्ह दुइ व्यक्ति।
पृथ्वी पर जा देखथु अछि की घोर-धरणि-आसक्ति॥'
'हारुत' 'मारुत' देवदूत केर गौरव जनु रवि चन्द्र।
धरा-धूलि केर अंशी भेला मनुजक गृह लए जन्म॥
देह-देहमे माया-ममता, छाया छायामे फन्द।
कमल-दहहिँ भए जाइछ एतए शतशः आकाशक चन्द॥
शब्द, गन्ध ओ वर्ण एतए पओलक अछि अद्भुज फाँसी।
घाट घाट पर हँसी घैलि भरि बाधमे कानए वंशी॥
दू दिनमे ओहि दिव्य दूतकेर प्राण भिजल माटिक रसमे।
शफरिक चक्षुक चटुल चातुरी कएलक दाग हृदयतलमे॥
घघरी झलकि, छलकि गगरी-नागरी गबैत जन जाए
स्वर्ग दूत डुबला ओहि रूपहिँ बिका गेला 'राँगक' पाइए।

अधर अनारक रसमे डूवल नरक कुण्ड केर भय छूटल।
माटीक सुराही मस्त भेल अति शीघ्र रक्त-रससँ तीतल॥
कतए गेल संयमक वान्ह! वारण-निषेध सीमा टपि कए।
प्राण तृप्त कए माटिक मदिरा पीलन्हि ओष्ठ-पुष्प-पुट दए॥
कहल विधाता हँसि 'वहिस्त'मे फरिस्ताक शुभ दलमे।
'हारुत' 'मारुत' की कएलक देखह विनाशिनी धरणीमे॥
नयन एतए जादू जानए, वश एक इशारा मात्र आँखि।
लाख युगक अति घोर तपस्या विला जाए खसि कोनो खाधि
अछि सुन्दरी ई वसुमती
चिरयौवना देवी, शिवक नहि कामदेवक रति वूझी।

वाराङ्गना

के वाराङ्गना कहए तोरा, के थूकए तोहर देह उपर?
भए सकइछ तोरे स्तन्य देलक सीता सन सती माए भू पर॥
नहि हो सती तथापि तोँ माता वहिनी सभहिक जाति।
तोरो सभहिक धिया पुता हमरे सभ सन, अछि हमरे ज्ञाति॥
"हमरे सभहिक वन्धु, स्वजन, आत्मीय व्यक्ति वा काका।
ओकरा सभहिक पिता-ओकर मुह पर चिह्नित अछि स्पष्ट लिखा॥"
हमरे सभ सन ख्याति, मान, यश ओहो सभ पावि सकैए।
ओकरो सभहिक तीव्र साधना स्वर्गो पावि सकैए॥
स्वर्गक वेश्या घृताचीक सुत महाधनुर्धर द्रोण छला।
कुमारीक सुत विश्व-पूज्य कृष्ण-द्वैपायन व्यास भेला॥
कानीन-पुत्र छल कर्ण भेल जे दानवीर ओ महारथी।
देवलोकसँ ओ पतिता गङ्गा शिव-पत्नी मस्तक पर रहली॥
शान्तनु नृप प्रेम निवेदन पुनि ओहि गंगा देवी प्रति कएलन्हि।
हुनकेसँ पुत्र अजेय भीष्म कृष्णो जनिका प्रणमन कएलन्हि॥
सुनलहुँ मुनि भेला 'सत्यकाम' जे जारज 'जावाली'क तनय।
विस्मयकर जन्म जकर ओ 'यीशू' महा प्रेम-प्रेमिक परिचय॥
केओ नहि पाप-प्रलिप्त एतए, नहि केओ अछि जकरा घृणा करए।
हो प्रस्फुटित अयुत कमलक दल पंकिल कारी जलहि निलय॥

सुनह मनुष्यक वाणी।
जन्महि भेलापर मनुष्य जातिक ने केओ भेल ज्ञानी॥
कएलहुँ पाप बात ई कहि, अधिकार न पुण्य करबाक?
कए शत पाप, शुद्ध भए ओ पुनि इन्द्र भेला देवताक॥

यदि मुक्ति अहल्याकेँ होअए, मा 'मेरी' भए सकती देवी।
तोँहू सभ किए नहि पूज्या होएबह, शुद्ध भेल सत्यक सेवी॥
तोहर सन्ततिकेँ जारज कहि के दुर्मुख देते गारि।
ओकरा सभकेँ ई दू बातक जिज्ञासा करब विचारि

हे शुद्ध मनुज! हम ई पूछी
डेढ़ कोटि शत सन्तति अछि एहि पृथ्वीकेर अधिवासी
एहिमे कए लोकक माता आ'र पिता छलथिन्ह निष्काम व्रती
जे कन्या पुत्रक कएल कामना कए जन वास्तव सत्य सती?
कए जन कएल तपस्या जे सन्तान प्राप्त हुनका होअए।
ककरा पापेँ कोटि कोटि दुःखक बच्चा सोइरीमे जनमए
आओर मरए?
मात्र पाशविक क्षुधा-शान्ति ले' नर-नारिक सम्भोग जते
ओहि वासनाक सन्तति हम सभ तैओ हमरा अछि दम्भ कते?

सुनह धर्मक 'चाँइ'
जारज कामज सन्तति ओ सभ, छै प्रभेद किछु नहि।
असती माइक पुत्र एतए यदि 'जारज' कहबए।
असत् पिता कर सन्तति निश्चय जारज होअए॥

नारी

गाबी साम्यक गान
हमर दृष्टिमे पुरुष नारि विच भेदाभेद न ज्ञान।
विश्वक जे किछु महत् सृष्टि अछि चिर कल्याणक काज।
आधा ओकर कएल अछि नारी आधा पुरुष समाज।
विश्वहिँ जे किछु पाप-ताप वेदना अश्रुकेर धार।
आधा ओकर पुरुष कारण, आधाक नारि आधार॥
नरक-कुण्ड कहि जे करइछ नारी-प्रति हेयक ज्ञान॥
ओकरा कहु जे आदि पाप नारी नहि, नर शैतान॥
अथवा पाप कहए शैतान जे ओ नर नहि वा नारि।
ओ थिक क्लीव तेँ नर-नारीकेँ दैछ पापकेर गारि॥
एहि विश्वमे जते फुलाएल फूल, फड़ल अछि फल।
नारी देलक अछि रूप, गन्ध, रस, मधु मोहक निर्मल॥
ताजमहलकेँ देखलह अछि, देखबह ओकर जे प्राण।
अन्दरमे 'मुमताज' नारि अछि बाहर 'शाहजहान'॥

ज्ञानक लक्ष्मी, गानक लक्ष्मी, शस्यक लक्ष्मी नारी।
सुषमा-लक्ष्मी सेहो नारि-रूपेँ फिरैत छथि सञ्चारी॥
पुरुष लाएल दिवसक ज्वाला आ' तप्त रौदकेर धाह।
अनलक अछि कामिनी यामिनी शान्ति, वायु, जलवाह॥
दिवस शक्ति, साहस देलक अछि, रजनि देलक अछि वधू-गेह।
पुरुष अवैए मरुक तृषा लए नारी दैत'छि मधु-रस स्नेह॥
धनहर खेत होअए तँ ओहिमे पुरुष जोतैए हर।
नारी ओहिमे धान रोपि, कए दैछ सुभग हरियर॥
नर जोतए हर, नारि देअए जल ओ जल-माटि मिलित भए।
फसिल होअए वढ़िआ सोना-सन शीस भरल मन मोहए॥

सोना चानिक भार

नारिक अङ्ग स्पर्श करितहिँ होइछ ई अलङ्कार।
नारीक विरह, नारीक मिलनमे नर पओलक नव प्राण।
ओकर कथा सभ भए गेल कविता, शव्द भेल अछि गान॥
देल क्षुधा नर, नारि सुधा रस सुधा क्षुधा सङ मिलि कए
जनमल महामानवक ओ शिशु वढ़इत अछि तिल तिल कए॥
जगतक जते' पैघ किछु भेल'छि जे किछु वड़ अभियान
माता, वहिनि, वधूहिक त्यागेँ भेल ओ एते महान।
कोन रणहिँ कत' रक्त देल नर - ई लीखल इतिहासे
कत' नारी सीँथिक सिनूर देल ई अनलिखित उदासे॥
कते भाए निज हृदय फाड़ि देलन्हि, भगिनी सेवा कएलन्हि।
वीरक स्मृति-स्तुति गान सङ्ग हिनको सभहिक सेवा लिखलन्हि॥
कहिओ खाली एकसरे युद्धमे जयी पुरुषकेर खड्ग भेल।
प्रेरणा देलक अछि शक्ति, देलक हुनि नारी विजयश्रीक लेल॥
राजा करइछ राज्यक शासन, राजाकेँ शासित रानी।
रानिक दुःखेँ धोआ गेल अछि जते राज्यकेर ग्लानि॥

पुरुष होइत अछि हृदय-हीन

मनुष बनए ले' नारी देलक आधा हृदयक रीन।
पृथ्वीपर अछि जनिक ख्याति, ओ वास्तव अमर महामानव
वर्ष वर्ष हम सभ जनिकर स्मृतिमे करी महा उत्सव॥
आवेशक वश हुनि जन्म देलन्हि ओ छला विलासी मात्र पिता।
लवकुशकेँ त्यागल राम हुनक पालन कएलन्हि सीतामाता॥

नारी शिशुपुरुषहिँकेँ सिखबए-स्नेह, प्रेम, माया, आ दया।
दीप्त नयनमे काजर अंचित वेदनाक जनु घन-छाया॥

ओ नर अवतार!
पिता देल जादेश माएकेँ काटल चला कुठार!
पार्श्व फेरि सूतल छथि अर्धनारीश्वर।
नारी दाबल रहल एते दिन आब पड़ल अछि नर॥
ओ युग भए गेल बासि।
जेहिमे छल पुरुष दास आ नारी सभ छल दासी॥
वेदनाक युग अछि मनुष्यकेर, साम्यताक युग आइ।
केओ नहि बन्दी रहत अन्यकेर, डंका बाजल भाइ॥
नारीकेँ बन्दी बनाए नर राखए यदि एहि युगमे।
तखन अपन निर्मित कारामे जाएत आगुक युगमे॥
युगक धर्म ई जानु
पीड़ा देलासँ पीड़ित ओ पीड़ा देत अहूँकेँ, निश्चय मानु॥

सुनह मर्त्यक जीव!
अनका जते दुःख देबह, तोँ होएबह दुःखेँ ततबे क्लीव।
स्वर्ण रूपकेर अलङ्कारयुत यक्षपुरीकेर नारि
बना देलक बन्दिनी तोरा केओ अविवेकी नारि!
निजकेँ आइ प्रकाशहिँ आनब तकर न छह व्याकुलता।
आइ भीरु छह, कात ठाढ़ि नेपथ्ये बाजह व्यथा-कथा।
आँखि आँखिसँ देखह नहि तोँ हाथक कारी, पाएरक थाल।
माथक घोघट फाड़ि फेकह तोँ, तोड़ह सिक्कड़ जाल॥
जे घोघट छह भीत बनओने ओ आवरण हँटाबह।
दूर करह दासीक चिह्न ओ सभ-आभरण-भयावह॥
धरित्रीक कन्या कुमारि?
घुमह फिरह नहि गिरिक गुफा वन-वन्य जीव सन गाबि।
कखन आएल 'प्लूटो' यमराजा राति निशीथहिँ पाँखि उड़ाए।
पकड़ि तोरा ओ भरल अपन निविड़ अन्धकूपहिँ खसाए।
ओ तोहर आदिक बन्धन ओहीसँ आइओ मरि रहली
मरणक पूर्वहिँ एहि धराधाममे आएल ओहि दिन विभावरी॥
यमपुरी छाड़ि नागिनी जेकाँ ओ आवि जाएत पातालपुरी।
अन्धकारमे तोरा पथ देखबओ तोँ मानुअ नारिक भग्न चुड़ी॥

पुरुष यमक अछि क्षुधा-कुकुर, हो मुक्त खाए वश पदाघात।
पड़ि रहते ओ पाएर तरमे यमराजक सङे सहहि लात॥
बिलहलह तोँ अमृत एते दिन, आइ प्रयोजन आन।
अमृत पिअओलह जेहि हाथेँ ओहि हाथेँ करह विष दान॥
आब न ओ दिन दूर।
जे दिन धरणि सुनत पुरुषक सङ नारिक जय जय सूर॥

कुली मजदूर

ओहि दिन देखल रेलमे
कुली एक छल-जकरा बाबूसाहेब निचा खसओलन्हि ठेलि कए।
आँखिमे भरि गेल नोर।
एहिना की एहि जगमे खाएत मारि जे अछि कमजोर?
ओ दघीचिकेर हाड़-देलक अछि वाष्पक रेल।
बाबूसाहेब अबइत चढ़ला ओहिपर, कुली पड़ल रहि गेल।
वेतन देलहुँहेँ चुप्प रहह जत मिथ्याचारी दल।
कते पाइ तोँ देलह कुलीकेँ रहलह कते कोटि अपना ले'
असल बात ई खोल।
राजपथहिँ पर चलइछ मोटर, सागर चलए जहाज।
रेलपथहि चलु वाष्पशकट-कल छापल देश, समाज॥
कहू ककर ई सकल दान थिक ओ अहाँक अट्टालिका।
ककर रक्तसँ रङल घूमि कए देखु ईंट-ईंटमे अंकित ई लेखा॥
अहँ की नहि जानिअ, प्रति भूमिक कण कण तँ ई जानए।
ई पथ, ई जहाज, ई गाड़ी अट्टालिका कण जानए॥

आबि रहल अछि शुभ दिन।
दिन दिनसँ बड़ देना पओलह सधबए पड़तह ऋण॥
गैँता, खन्ती चला हथौड़ी तोड़लक अछि जे पहाड़।
कटलक पाथर पथक दुनू दिस पड़ल देखिअ जे हाड़।
गोरे सभकेँ सेवा करइत कुली, राज, मजदूर।
तोहर काजमे लागल ओ निज अङ्ग लगाओल धूर।
ओएह मनुष्य थिक, ओएह देवता गाबह ओकरे गान।
ओकरे छाती पर लात मारि नर पाओत की उत्थान?

तोँ सुतल रहबह तिनमहलहिँ हम सभ रहबे नीचा!
तखन देवता कहबह तोरा ई सोचब छह मिथ्या॥
जकर भिजल मन, देह सकल अछि माटिक ममता रसमे।
एहि धरणीक नाओक करुआरि रहत आब ओहि करमे॥
ओकर पाएरकेर धूरा आँजुर भरि कए माथ लगाएब।
सभक सङ्ग पथ चलब जकर पद-रजसँ शोभित होएब॥
आइ निखिल वेदना, आर्त्त पीड़ितक मथित सभ रक्त
लाल लाल रङ उदित प्रभातहिँ अरुण तरणि आगत्य॥
आइ हृदयकेर जाम-धएल जत छह केबाड़ ओ तोड़ह।
रङ्ग कएल चमड़ीक आवरण जते सभहिँकेँ खोलह॥
आकाशक अछि जते वायु सभ भेल गाढ़ अति नील।
माता-नाति बहार करए सभ हृदय घावकेर खील।
खसओ टूटि आकाश सकल हमरा सभहिक घर पर।
चन्द्र, सूर्य, तारागण सभटा खसओ हमर माथहि पर॥
सभ कालक सभ देश-विदेशक सभ केओ छी मनु-अंशी।
एक भेल सभ ठाढ़ सुनह ओ एक मिलानक वंशी॥

एक व्यक्तिकेँ कष्ट देल
ओ समान वेदना हृदयमे सभहिक सत्यहि भेल!
एक व्यक्ति केर असम्मान
निखिल मनुज जातिक लज्जा ओ सभ थिक सभहिक अपमान।
महामानवक महाव्यथाकेर आइ महा उत्थान।
ऊर्ध्व लोक भगवान हँसथि नीचाँ काँपए 'शैतान'॥

□

हमर कैफियत

हे भाइ! वर्तमानक कवि हम, नहि 'नवी' भविष्यक द्रष्टा हम।
'कवि', 'अकवि' कहू जे किछु बुझाए, मुँह हमर बुझए जे किछु छी हम॥
केओ कहैछ, जो तोँ भविष्यमे
कवि 'कवीर' सन मानल जएबेँ!
जेना 'रवि'क कलमे बहराइछ, तेहने करह चिरन्तन।
दूसए सभहिँ तथापि प्रमाती राग भैरवी हमर गान।

कवि भाइ लोकनि, भए कए हताश, पढ़ि हमर लेख फेकैछ श्वास।
बाजए केओ क्रमे एकाकी भए रहलेँ ठेलैत 'पोलिटिकल' पास॥
पढ़इछ नहि पोथी अछि बहकि गेल ओ।
केओ बाजए-नहि किछुओ करबाक जोग ओ।
कहए केओ अछि मोटा गेल जेलहिँमे बैसि खेलाए तास।
केओ कहए तोँ जेलहिँ छलेँ वेश, किछु कर जे पुनि जेलहिँ निवास॥

गुरू कहथि तोँ कहइत छेँ तरुआरिहिसँ दाढ़ी काटब।
प्रति शनि दिन पत्नी गारि देथि अहँ जानी टा तौला फोड़ब।
हम कही प्रिये! हम हाटहिँमे तौला फोड़ी।
तहिना बन्द लिफाफा-चिट्ठीकेँ फाड़ी॥
सभटा छोड़ि बिआह कएल हम हिन्दू कहए 'आड़ी चाचा'।
यवन न हम 'काफीर' बूझि ताकी टीकी, दाढ़ी, काछा।

मो-लोभी (हम लोभी) छथि जते मौलवी-मौलाना कह हाथ उठाए।
मुहसँ देवी देवक नामे-दिअ कहए सभ क्षुद्र बुझाए।
फतोवा देलहुँ काफीरक अछि काजी ओ।
यदि शहीद होएबा ले' अछि वास्तवमे राजी ओ॥
'आम पाड़ा' पढ़ि हम पैघ लोक, बौआइ एतए हम भात छोड़ि।
हिन्दू सोचए ई लिखए फारसीमे कविता ई छोटकासँ सम्पर्क जोड़ि।

'अनकोरा' जते अहिंसासँ 'नव कोपरे सन' दल अछि खुशी।
'भायलेंस' 'भायलिन' सम हम छी, विद्रोही बनि नहि तुष्ट रही॥

'ई अहिंसा' विप्लवी भावए
नव चरखाक गान किए गाबए?
भीतरसँ हम छी नास्तिक, गुरु राममन्त्रसँ कान भरी।
स्वराजी भावेँ हम 'नारा' दी, 'नारा' देवक अङ्ग रही॥

पुरुष बुझए नारीकेँ प्रश्रय देनिहार हम
नारी बूझए हमरा अप्पन विद्वेषी।
आ विलायँत घूमल- प्रवासी बन्धु कहथि
इएह तोहर विद्याक ज्ञान छिः!
कहथि कतेको भक्त हम नव युगक 'रवि'
युगक न होइ वानर बाजव सन छी कवि।

की जे लिखी-छाउरमे लेपब मगजमे अपनो नहि आबए।
हाथ तँ ऊपर उठए भाइ नहि, लिखी घाड़केँ नीचा कए।
बन्धु! देलह किछुओ न दान!
किन्तु राज-सरकार देल अछि मान।
जे किछु लिखी अमूल्य बूझि, बिनु मूल्यहिँ लए, किछु आ'र।
सुनलहहेँ की? राजक प्रहरी धएने पाछु हमार॥

वन्धु हमर! तोँ तँ देखने छह हमर मनक मन्दिरमे
हाड़ो कारी भेल न रोकल भेल मनक बन्दीकेँ।
जते बेर बान्ही तोड़ए ओ शृङ्खल।
हम मारि मारि भए गेलहुँ विकल।
तैओ बताह ओ सुनए कहाँ मानलक न 'रवि', 'गान्धी'केँ।
उठि अकस्मात् रातिक अन्हारमे बाट तकैछ वन-झड़मे।

कहै' छिऐ हम रे बताह सुन, केहेन तँ छेँ खुशिहालीमे।
प्रायः 'हाफ' नेता होएबेँ एहि बेर न से 'फुसकाली'मे।
फुल नेता नहि होएबेँ, हाय!
भाषण दए सभामे कानब जाय
मिरचाइक बुकनी 'पौकेट'मे रखने बुड़िबक एहि बेर हमरा
तोँ अपन घरक चारकेँ छारिले नहि तँ पछतेबेँ एहि तरहेँ अन्त समय।

बूझए नहि जे ओ चारण बनि देश देशमे गाबए गान।
गान सूनि सभ बुझए आब की एकर समय बिततै मुह पान।

रहत आब नहि मलेरियाक महामारी।
अपनहि आओत स्वराज चढ़ल घोड़ा-गाड़ी।
चन्दा चाही अपन खोराकक अन्न दैछ, बच्चा कनैछ।
माए कहए चुप रह रे अलच्छा, देखहिँ आगु स्वराज अबैछ॥

भूखल नेन्नाकेँ स्वराज नहि, चाहिअ भात-नोन बरु माङि।
बेर बितल खएलक नहि बच्चा, भुखल पेट जनु लागए आगि॥
चिचिआइत दौड़ए बताह सन
निसा स्वराजक गेल छोड़ि तन,
कहिअन्हि कानि अहो भगवान! अहाँ छी एखनहुँ कारी चून-
किए न उठि कए ओकर गालमे लगवी, जे पिबैत अछि शिशुहुक खून।

हम सभ तँ बूझिअ, स्वराज आनक बदलामे लएलहुँहेँ जरबै ले' घास।
कते कोटि भूखल नेन्ना केर क्षुधा शान्ति ले' कोपड़ ग्रास।
कोटि रुपैआ आएल, किन्तु न आएल स्वराज।
नहि दए सकए रुपैआ भूखल दीन समाज।
माएक 'दूध'केँ काटए बच्चा, कहिअ बाघ तोँ खा ले घास।
देखी मा माँगै छै घर-घर भीख, राखि भूमि पर तनयक 'लास'॥

बन्धु! आओर किछु नहि कहबे बड़ विषज्वालाक हृदयमे कष्ट।
देखि, सूनि विक्षिप्त भेल छी, तेँ किछु बूझि कहिअ मुख-स्पष्ट॥
एकसर रक्त बहाएब निष्फल,
जे किछु लिखी, रक्तसँ घोरल,
पैघ बात, शुभ भाव न मनमे, जे किछु लिखी दुःखसँ भाइ।
अमर काव्य तोँ सभ लिखइत छह, बन्धु! सुखहिँमे जे छह आइ॥

परबाहि न हमरा बाँची वा हम नहि बाँची युग बितलापर,
मस्तक पर रवि ज्वलित रहत स्वर्णाभ एतए शत पुत्र हमर
प्रार्थना करह जे छीनए-लूटए तैँतिस कोटिक मुखक ग्रास।
हो हमर रक्तसँ लिखल लेख जे ओहने कुकर्मिक सर्वनाश॥

□

सव्यसाची

अरे न किछु डर आब, डोलि रहल अछि हिमालयक ऊपर प्राची।
गौरीशङ्कर-शिखर वर्फकेँ छेदि कए जागि सव्यसाची।
द्वापर युगक मृत्यु ठेलि कए,
जागल उठि ओ आँखि खोलि कए,
महाभारतक महावीर कहइत अछि हम आबि गेल छी',
नव यौवन केर जल-तरङ्ग पर नाचि रहल पुरना प्राची॥

अज्ञात वास ओ नृप विराटगृहकेँ तोड़ल जे पार्थ वीर।
गाण्डीव धनुष टंकार कएल कए लक्ष लक्ष रिपुदल अधीर॥
बाजए विषाण अरु पाञ्चजन्य,
सज्जित रथाश्व बढ़ि चलल सैन्य,
सन् सन् बिहाड़ि नाचए जंगल आ रसातलो भयसँ काँपए
झूला पर बैसल अछि हँसैत जीवन मृत्युक अनुराग भरल॥

युग युगमे नर बिच बाँचि जाइछ पापी कौरवगण दुर्विचार,
अविवेकी दुःशासन दुर्योधन पद-पथ चलनिहार।
लङ्कामे आ' कुरुक्षेत्रमे,
लोभ दानवक क्षुधित नेत्रमे,
फाँसीक मञ्च, काराक बेँत पर जे ई सभ एखनो चिह्नित,
सोचलहहेँ जे एहि उत्पीड़नकेँ सधा देतै केओ जन समुचित?

काल-चक्र घुरि रहल वक्रगतिसँ अविरत,
आइ शिखर पर जे केओ अछि, दोसर दिन होएत ओ पदनत।
सम्राट आइ अछि, काल्हि बन्दी भेल,
आइ खोपड़िक व्यक्ति नरपति भेल।
कंसक कारागृहमे जनमल कंसक हन्ता अति विस्मय,
ओकरे छाती फाड़थि नृसिंह जे जनक क्रूरकर्मा अतिशय।

आइ जकरा माथपर जूता चलाबए काल्हि ओकरा लोक सभ बाबू कहैए।
दीर्घ कालक वन्दिनी सहसा सभक वन्द्या बनैए॥

दिक् दिशामे बाजि रहल अछि डङ्का।
जगला शङ्कर विगत होअ सभ शङ्का॥
'लङ्कासायर'मे कनइत छथि वन्दिनी बनलि लक्ष्मी सीता।
अपना सोझाँमे देखतीह की काल रावणक ज्वलित चिता॥

युग युगमे नव भिन्न रूपमे सेनापति ओ अबइत छथि।
युग युगमे भगवान स्वयं सारथी ओकर ओ बनइत छथि॥
युग युगमे अबइत छथि गीता उद्गाता।
न्याय मार्गपर दृढ़ पाण्डव-सैन्यक त्राता॥
अशिव दक्ष-यज्ञहिमे अपने मरि गेलीह स्वाधीन सती।
रुद्र शिवक खङ्गेँ भेलाह शिर-छिन्न प्रजापति यज्ञव्रती॥

नव मन्त्रेँ दीक्षा देवा ले' आबि रहल छथि पुनि अर्जुन।
युवक वीर जागह, सूतह नहि फेर सूनि शान्तिक प्रवचन॥
कत दधीचि निज अस्थि देल रे,
दानव दैत्यक नाश भेल रे,
अमृत दान दए स्वतन्त्रता चाहिअ बैसल हम काल गनी,
जागह युवक, भेलह ई मिथ्या एहने जे ई ताँति वुनी॥

दहिना हाथेँ सिक्कड़ि तोड़ि वाम हाथसँ वाण चलाउ।
एहि निरस्त्र बन्दीक वेशमे युगक शस्त्रधारी अगुआउ॥
पूजा कए केरा टा पओलहुँ,
एहि बेर महावली अहँ अएलहुँ।
रथक आगु बैसाउ चक्रधर, रखता चक्र सम्हारि।
आओर सत्यसेवक नहि देखि सकए पुनि सत्यक हारि॥

मच्छर मारि तोप गरजैत'छि विद्रोहक जड़ि देल उखाड़ि।
दहिन हाथ हथकड़ी नेने हम वाम हाथसँ माछी मारि।
बुझइत शत बाधा टिक-टिकिया अछि कपार पर।
लए दाढ़ी आ टीक विषय एखनो छी बाँचल।
छी बाँचल जनु मृत्युक पथएहि वेरहिँ अहाँ सव्यसाची।
जे किछु हो किछु दिअ हाथमे एहि वेर मरबासँ बाँची॥

□

पथक दिशा

चारू दिस एहि गुण्डा आ' बदमास सभक अड्डा दए कए
आगू आगू चलवा ले' की तोरा नहि रहतौ प्राणक भय?
की जा सकवैँ तोड़ि एहि चौबटिआ परहक चक्रव्यूह?
चढ़ि सकवैँ की पाथर पर, उपर सघन-जंगल समूह!!
आइ प्राण-दायक भगोड़ पर उड़ि रहलै अछि गिद्ध चिल्हारि।
एहनामे तोँ ज्योतिक शिशु! की करबैँ, कह किछु सोचि-बिचारि॥
पथराह भूमि छीटल कादो, रे ई कदर्य होरीक खेल।
मुह पर खाली कारी लेपए भोजपुरिआ केर हुड़दुंग हेड़॥
वङला देशो मातल की रे, बिसरलक तपस्या अपन अरुण।
ताड़ीखाना केर हल्लामे धूरामे अएला इन्द्र वरुण!!
रे व्यग्र-प्राण तोँ अग्र-पथिक की वाणी सुनि कए करह साध।
की सूनए देतह मन्त्र तोहर निन्दावादिक ढक्का निनाद?

नर नारी अछि सङ्गहि गवैत बुझु कण्ठ फाड़ि अश्लील गान।
बुझइछ ओ सभ जनु सुन्दरताक जयध्वनि करइछ सामगान॥
एहि बीच खबरि भेटल छौ की नव विप्लव केर घोड़ासबार
अछि आबि रहल, फाटल अन्हार, खूजल पुबारि भागक केबाड़॥
भगवान आइ भए गेला भूत जे पड़ले फेरथि दशो चक्र,
पूजक नास्तिक मिलि कए देलक पूर्वक हुनकर अस्तित्व वक्र।
हुनका बँचबै ले' एखनो धरि नबयुगक केओ जन अछि बाँचल?
हा धूलि-मलिन, आभरण-हीन-निस्तेज नयन, तनु दीन बनल!!
मसजिद आ मन्दिर-ई सम थिक सैतान सभक मंत्रणागार,
रे अग्रदूत, एहि बेर तोड़ै ले' अबइछ की 'कालापहाड़'!!
यदि जानै छैँ ई खबरि, सुना, ओहि टोपरमे बान्हल सभकेँ।
धर्मध्वज एखनो फहराइछ टीकक बन्धन दाढ़िक केशे॥

निन्दावादिक वृन्दावनमे सोचने छलहुँ न गाएब गान।
नारीक स्थानमे रहि सुनि कए सुन्दरताकेर हीन अपमान।

क्रुद्ध रोष ओ रुद्ध व्यथासँ फोँपा जेकाँ क्षुब्ध आवाज।
बतहा सभहिक भठियारीमे नट्टिन सभहिक वीणा बाज॥
सिन्धु मथल सभ केओ देयाद मिलि लोभी, पिशाच ओहिमे जे छल
लए अमृत तथा लक्ष्मी अपने, ओ बँटनिहार किछु वाँटि चुकल॥
विष उठल अचानक जखन, नहि ककरो देखिअ कोनो दिशा।
विषज्वालासँ हो दग्ध विश्व, सुरगण करइत छल शान्त तृषा॥
श्मशान शव-भस्म सेज पड़ल-आइ ताकि रहलेँ हुनका
रक्षक देव, आइ भाङ पीबि छथि घोर निसामे आँखि मूनि।
रे अग्रदूत तोँ तरुण मनक अति गहन वनक छेँ सन्धानी।
जाग, खबरि ले कतए हमर अछि युगान्तरक खड्गपाणि॥

□

दारिद्र्य

हे दारिद्र्य! अहाँ हमरा कएलहुँ महान!
देलहुँ अछि हमरा अहाँ 'ख्रीष्ट सम्मान' दान।
कण्टकक मुकुट शोभा देलहुँ अछि हे तापस!
निस्सङ्कोचेँ प्रकटित होइछ दुस्साहस॥
नाङट कठोर दृक्पात, वचन छूराक धार,
वाणी अहाँक हमरे शापेँ तरुआरि-सार॥

ककरो दुख देबामे अहँ दर्पी छी हे तापस,
अम्लान स्वर्ण सन नोर बहक कए देल विवश।
असमयहिँ सुखाएल हमर रूप, रस, गन्ध प्राण,
कर दूनू जोड़ि माङिअ हम ई सौन्दर्य दान।
हम जए बेर जनमिअ, चिर वुभुक्ष अहँ,
आगु आबि करु पान, रहि जाए मात्र मरुभूमि तहँ।
देखि अपन कल्पक लोक हा हमर नयन
हमरे सुन्दरता पर करइछ अग्निक वर्षण॥

वेदना हरदि डंटीपर हा कामना हमर
शेफालिकाक सन शुभ सुगन्ध भरल
विकसित होअए चाहए परन्तु तोँ हे निर्मम!
दल वृन्त भांग शाखा समेत दए देलह काटि कठिहारा सभ।
आसिनक प्रभात सन छल छल
हियकेँ देलह तोँ शिशिरक शीतल जल।

टलमल करइत धरणीक रूप करुणाक बात,
तोँ सूर्य, तोहर तापेँ सुखाइछ सभ मृदुल बात।
करुणा नीहारक बिन्दु म्लान भए जाए जखन,
धरणी केर छायावृत स्थल स्वप्नो टुटि जाए तखन
सुन्दरक तथा कल्याणक, वश तरल गरल
तोँ ढारि कण्ठमे बाजह ई अमृतकी फल!

ई ज्वाला नहि, नहि निसा न ई उन्माद थिकै,
रे दुर्बल, ई अमरताक अमृत-साधना थिकै।
एहि दुःखक पृथिवीपर तोहर व्रत किछु नहि छौ,
तोँ नाग, जन्म तोहर वेदना सङ जरतौ॥

कंटक वनमे बैसल तोँ की फूलक माला गथबेँ?
तोहर भाल पर लिखि देने छौ दुःख-वेदना पहिने॥

गाबि गान, माला गाँथिय, पहिरओलक कंठहिँमे ज्वाला।
बुझलहुँ डँसलक सर्वाङ्ग हमर नाग-नागिनि बाला॥
भिक्षाक पात्र लए घूमह तोँ वहु द्वार द्वार,
हे क्षमाहीन दुर्वासा! वितवए रात्रि-काल
सुखसँ नव वर-वधू जेकाँ ओहि ठाँ कखनो
हे कठोर-रव! जाए कहह रे मूढ़ सून
धरणी नहि कुञ्जविलास थिकी नहि नहि ककरो,
अछि अभाव, अछि विरह, अनेको दुख आओरो

अछि ओछाओन तर काँट प्रियाकेर बाँहि
भोग करक छह एहि विधि हाहाकारक आहि।
क्षण भरिमे जे सुख-स्वर्गक वाती मिझा जाइछ,
कालरात्रि नहि फाटए, चाहए ई बुझाइछ॥

अनसन-क्लिष्ट-शरीर-क्षीण पथ होइत चलह।
सहसा की देखि, तोहर भ्रूधनु किअ टेढ़ भेलह?
दुहु नेत्र पूर्ण अछि रुद्र-चलावए अग्निवाण।
अवइछ राज्यहिँ दुर्भिक्ष रोग-विरड़ो महान॥
आनन्दक कानन जरए ढहए उत्तुङ्ग महल।
तोहर विधानमे मृत्यु-दण्ड अछि मात्र लिखल॥

नहि तोरा लग अछि नियमक व्यभिचार
चाहै छल तोँ नग्नताक वश नग्न रूप व्यापार।
नहि सङ्कोच न लाजक किछुओ ज्ञान,
उन्नत शिर कए देलह ओकर जे नीच अज्ञान॥

मृत्युपथक यात्रीदल तोहर मात्र इसारा पावि।
फाँसिक डोरी हँसि कए पहिरए नहि किछु आगू भावि।
नित्य अभावक भाला ओ निज वक्षस्थलमे भोंकए।
मृत्युयज्ञ-साधना-लीन अछि पैशाचिक सुख भोगए॥

लक्ष्मीकेर किरीट पहिरि तोँ किछु किछु फेकै छह।
धूरामे तोँ शारदाक वीणाक तार पीटै छह॥
कोन सूर बजवए चाहह तोँ, से नहि बूझै छी।
जते सूर अछि-आर्त्तनाद करइत सन बस सूनै छी॥

काल्हि भोरमे उठलहुँ तँ सुनलहुँ बजइछ सहनाइ
बाजि रहल जनु करुण सूरमे जेना ओ बजनाइ।
सुनाबा ले' केओ हो नहि घरमे कानि कानि कए
सोर करै छल ओ सहनाइ बजा कए॥

बसनिहारकेर प्राण आइ सहनाइक सूरसँ,
भसिआ रहल जेना प्रियतमक देश सुदूर सँ,
कहलन्हि जे हम आबि रहल छी सखी कहैत'छि बाज,
मूनि नेने किअ आँखि, बात की काजर पोछक काज?

सुनइत छी आइओ प्रभातमे बाजि रहल सहनाइ।
'आउ, आउ' कनइत सन बाजए जनु सहनाइ।
म्लानमुखी शेफालिका झरि झरि खसइछ,
विधवाक हँसी सन स्निग्ध गन्ध धरि रहइछ॥

नचइछ दिक्काली (प्रजापति) चपल पाँखि लए।
आइ विचित्र निशाकाल पुष्पक प्रगल्भ्य लए।
चुम्बन लेल विवश कएलक ओ' भमरा सभहिक पाँखि।
दए परागमे हरदि रंग, आ' अङ्गहिमे मधु माँखि॥

उछलि उठल जनु दिशा-दिशामे प्राण।
स्वयं अगोचरहिँ गाबि रहल किछु गान।
आगन्तुक आनन्दें, अकारणे जे आँखि
भरल अश्रुजलसँ, देलक जनु केओ बान्हि॥

धरित्रीक 'राखी'-बन्धनसँ कहइछ भाइ!
पुष्पाञ्जलि भरि दुहु कर, कहु-नहि जाइ।
धरणी आगू वढ़ि कहु 'दिअ उपहार'।
ओ जनु छोटि वहिनि मम भरल दुलार॥

सहसा चमकि उठी शिशु उठल चेहाए
भूखेँ कनइत अछि घरमे नहि किछु हाय।
काल्हिएसँ भरि दिन हे तपी निर्दयी वीर।
कानह हमरा घरमे सभदिन भुखल शरीर॥

प्रिय वौआ! नहि हमरा किछु आधार
दूधक दुइओ ठोप देब अधिकार।
आनन्दक अछि नहि, नहि; वस अछि दरिद्रता-भोग।
हो असह्य ओ पुत्र हेतु वा स्त्रीक हेतु प्रतिदिनक रोग॥

हमरा दोआरि पर एहि ठाँ वंशी के बजाओत!
कतए हँसी मुख के आनन्दक गीत गाओत!!
कतए पाएव फूलक रस-आसव? पीवै छी हम भरि गिलास।
थकुचि धुथूरक रस, हँ चिन्तन तजि नयनहि निरास॥

सुनी आइ ओ आगन्तुक अछि गावि रहल सहनाइ।
बुझि पड़ैछ जनु कानि रहल हो नहि किछु किछुओ नाहि॥

□

ईद मोबारक

शत योजनक कते मरुस्थल टपलहुँ हे,
कते बालुचरमे चलैत हा आँखिक नोर वहओलहुँ हे
वर्षक बाद अबैछ 'ईद'!
भुखल भिखारिक द्वारहिँ देब सन्देश सेहो किछु आनब हे,
काँटक वनमे गमगम फुलबाड़िक शुभ आश्वासन हे।

सुखी पपीहा दिशा-दिशामे 'पिउ' 'पिउ' गवइछ;
बधू आइ भरि राति निनिर्मिष पड़ले रहइछ।
कतए फुलक डालीमे कनइछ फूल,
दूर प्रवासहिँ-निन्द न आबए कोन प्रियाकेर संग
स्मरण होइछ खोँपामे बान्हल फूलक स्निग्ध सुगन्ध।
फूजल केशक करबीरक ओ फूल।

काल्हि द्वितीया चन्द्र उगै छथि तकर इसारा कोन?
अनलक सुखमे डगमग करइत पुलकित सन अछि मोन।
असावरी सुरमे बजैछ सहनाइ।
अतर-सुगन्धेँ पघिलल अछि पाथरक हृदय
हृदय-हृदयमे
स्वीकृति लेबक नहि बलाय किछु आइ।
आजुक दिनमे हासान होसनक गला-मिलन
नरकमे होइछ फूल तथा आगिक वर्षण।
शीरी फरहादक जेना मेल
सापिन सन बन्हने छै लयला कायाकेँ हे,
बाँहुक बन्धनमे आँखि मूनि आबेसेँ हे।
गाल गालमे चुम्बन होइछ बेर बेर॥

लह लह जरइत अछि आइ अति क्षुब्ध नरक,
शयतान आइ भसिआएल देखि शराब जाम।

दुश्मन-दोस्तक एक्के जमाति।
अछि 'आरकान' मैदान वनल सभ गाम गाम,
कोला कोली कए वादशाह-फकीरकेर सङ्ग आइ
'काबा' घरमे नाचए 'लात मानान' ॥

इस्लामी डंका गरजि रहत अछि आइ सकल जहांन।
नहि वड़ छोट केओ मनुष्य सभ अछि जग एक समान।
नहि कंओ राजा नहि प्रजा केओ
के अमीर! तोँ की नवाब वादशाह वालखानाक!
सभ दिनक हंतु तोँ छह कलङ्क, हा जगा देलह
इस्लामक ई सन्देह अहो।

कहइत अछि इस्लाम-सभक वीचमे हमहुँ एक छी।
सुख-दुख पड़लापर सभ केओ वश एक रूप छी।
नहि ककरो अधिकार ज्ञान।
ककरो नयनहि नीर वहए, आ' ककरो चमकए दीप?
दू चारि व्यक्ति ले' सुखक भोग लाखो लाखो रह वदनशीव!
ई नहि विधान इस्लामक छै'।

'इद् उल फितर' आनैत'छि जगमे नव विधान,
अरे सञ्चयी एहिमे जे करवेँ हृदय खोलि तोँ अन्नदान,
हो तोहर अन्न ओ क्षुधातुरक ले' प्राण दान ॥
'इफ्तार' काल भोगक प्याला पड़तौक हाथमे तोहर,
प्यासल सभ लोकक हिस्सा छै ओहीमे वुझिले राखल,
दए कए अनको तोँ स्वयं भोग कर महाप्राण।

मुक्त हृदयसँ अपना ले' तोँ दहक आइ 'जाकात'
नहि करह हिसाव, वन्द कए खाता वहिक बात।
करह गलत एहि दिन हिसाव।
हृदय-हृदयसँ आइ खुसीसँ करह दिल्लगी
आजुक दिन 'लएला' 'सएला' चुम्वनसँ लाल वनलि योगी
'जान देश' जाँचए आइ खराव।

बाट घाट पर आइ कहब हे भाइ!
'ईद मोबारक आ सलाम'।

गला-गला मिलि विलहब 'सिरनी' फुल 'कलाम',
विलहि देवा ले' आजुक ईद।
हमर दान अनुराग रङल अछि ईदगाह रे
सभक हाथमे दए देबैँ तोँ बुझ अपनाकेँ
देह तँ नहि, हँ, हृदय आइ होएतै सहीद ॥

□

चल चल चल

चल चल चल,
ऊपर नभहिँ नगाड़ा बोल,
नीचाँ धरणिक आसन डोल,
अरुण प्रातमे तरुणक दल
चल चल चल।

उषा द्वार पर दए आघात,
तोड़ि देव निशि-तिमरक गात,
हम सभ आनव भव्य प्रभात
झुका विघ्न विन्ध्याचल।

गाबि नवीन लोक केर गान,
करब सजीव महा 'शमशान'
हम सभ देवे नूतन प्राण,
बाँहिमे नव विधि बल।

चल रे नव जवान।
सुनहिँ पाथि कए कान,
मृत्युक तोरण द्वारि द्वारि पर
करु जीवन आह्वान।

तोड़, अर्गला तोड़,
चल चल बाजहिँ जोर,
चल चल चल।

ऊपर सँ हो बज्राघात,
मृत्यु-वरण सैन्योद्यत-गात,
दिशा-दिशान्त प्रयाणक वात
निद्रालय तजि चल।

ईप्सित बादशाही कहिओ छल,
एखनो चाहिअ ओ अतीत फल?
जाह मोशाफिर गान गाबि कए
खसतह तोहर आँखिक जल।

जाओ रे ओ 'तख्त ताऊस',
जाग, रे जाग बेहोस।
डूबल देख कतेक पारसी,
कते रोम कत' ग्रीक रूस,
ओ सभ केओ जागल।

जाग उठहि तोँ अरे हीनबल!
हम सभ गाड़ब नूतन कए रे
धूलिसँ ताज महल।
चल चल चल।

□

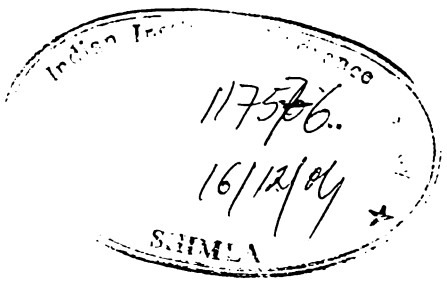

नू टा हिन्दू छी मुसलमान।
ब्रक पुतरी, हिन्दू जीवन प्राण ॥
आकाश एक अछि,
रवि-शशि विभोर अछि,
अन्तरमे, नाड़ी एक समान ॥

पिबै छी, एके देशक जल।
र उपजल खाइ फूल आ फल।
देशक माटिहिंमे भाइ,
मशान-भस्मक रूपेँ मिलि जाइ।
बाजी, एके सूरमे गाबी गान ॥

र रातिमे लड़इत छी अपनामे।
सभ! चीन्हि जाएब अपनाकेँ।
गराँ मिलि मिलि सभ
अपनेमे सभ!
भरल ई अप्पन हिन्दुस्थान ॥

वी एकताला/*मैथिली अनुवाद)*

-2

महाकवि काजी नजरुल इस्लाम (1899-1976) पूर्व बङ्गाल, आब बाङला देशक, गत शताब्दीक आदि कालहिमे एक क्रान्तिकारी लेखनीसँ- अपन कविता सभसँ-परम प्रसिद्ध भए गेल छलाह।

नजरुल इस्लाम वास्तवमे देश- भक्त, साम्यवादी, समस्त मानव समाजकेँ एक रूपेँ देखएवाला, दरिद्र, हीन-दीनक प्रति कारुणिक भावेँ हृदयसँ उद्वेलित क्रान्तिकारी, विद्रोही, आक्रोश व्यक्त करएवाला अद्वितीय कवि छलाह। हिनक विभिन्न भाषा, धर्म- ग्रन्थक अध्ययन-ज्ञान चमत्कृत करैछ।

प्रस्तुत संग्रह में हुनक बीस गोट कविताक—यथा-संभव मूल कविता सभक छन्दमे, कविक समुचित शब्द एवं भावकेँ रखैत मैथिलीमे रूपान्तरित करबाक प्रयास कएल गेल छथि।

Library IIAS, Shimla
MT 891.441 N 239 B
00117576

... सुविज्ञ
ले... अकादेमी
पु... -कथाकार
उपेन्द्रझा 'व्यास'।

Rupees Thirty only